।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13

दयानन्दाब्द १९०,
शक सं. १९३५,
सृष्टि सं.- १९६०८५३११४

मानवाधिकार आयोग के समक्ष दिल्ली में विशाल प्रदर्शन (पृष्ठ-३)

गुरुकुल नवापारा पर रिपोर्ट, पृष्ठ-४

तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें
शहीद दिवस में विशेष (पृष्ठ-१०)

वर्ष–12 अंक–01 चैत्र शु. ६ से वैशाख कृ. ५ सं. २०७० वि. 16 से 30 अप्रैल 2013 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 10 प्रति–5/–

मंचासीन बाएं से एस.के. शर्मा, वेद प्रकाश गर्ग, शिवराजवती आर्या, मिठाई लाल सिंह, योगेश मुंजाल, हसंमुख परमार, रविन्द्र कुमार, महेश चोपड़ा, आर.के. सेठी, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती व रामनाथ सहगल (मंत्री-टंकारा ट्रस्ट) - केसरी।

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

प्रतिज्ञा, पुरुषार्थ, प्रतीक्षा, प्रार्थना व प्रयास करते रहें : पूनम सूरी

रामनाथ सहगल (मंत्री)
टंकारा (गुजरात)

गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी 4 से 11 मार्च तक ऋषि बोधोत्सव समारोहपूर्वक ऋषि जन्मभूमि टंकारा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में निरंतर 7 दिनों तक चलता रहा। भारत के लगभग सभी प्रान्तों से पधारे ऋषि भक्त इसमें सम्मिलित हुए। यज्ञ में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं भजनोपदेशक सतपाल पथिक के मधुर भजन यज्ञ वेदी पर ही होते थे।

9 व 10 मार्च को प्रात: 6 बजे से प्रभात फेरी टंकारा ग्राम, टंकारा परिसर से होती हुई गुजरी, प्राकृतिक योग, प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा का कार्यक्रम निरंतर 3 दिनों तक चला।

उपदेश महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम, जिसकी अध्यक्षता एस0के0 शर्मा, मंत्री प्रादेशिक सभा, एवं निदेशक डीएवी कालेज पब्लिकेशन्स विभाग ने की। इस सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के वेदपाठों का उच्चारण किया गया। इसी के साथ भजन, कव्वाली, एवं चन्द्रशेखर आजाद के जीवन चरित्र पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया गया।

यज्ञवेदी पर कुछ विशेष परिवारों को सम्मानित किया गया, जिनमें नीलम-अरुण थापर एवं सरला-रमेश ठक्कर थे। इसी अवसर पर अरुणा सतीजा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। तदुपरांत दिल्ली से आर्यसमाज के युवा विद्वान डॉ0 धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार का यज्ञ

शेष पृष्ठ २......

आचार्या अन्नपूर्णा सहित वैदिक विद्वान सन्यासी सम्मानित

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली

आर्य विद्वानों को महर्षि दयानंद के जन्मोत्सव पर 18 फरवरी को प्रधान डीएवी कालेज प्रबंधकत्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट पूनम सूरी द्वारा प्रशस्तिपत्र, शाल, तुलसी पौधा एवं 21000 रुपये देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाली एक मात्र संस्कृत विदुषी डॉ0 अन्नपूर्णा आचार्य द्रोण स्थली देहरादून, देवव्रत, कुरुक्षेत्र गुरुकुल, आचार्य देवव्रत (आर्यवीर दल), स्वामी प्रणवानन्द (गुरुकुल गौतम नगर) स्वामी सुमेधानन्द, संस्कृत अकादमी के सचिव धर्मेन्द्र, वागीश जी एटा, गुरुकुल एटा, महेश वेदालंकार, अखिलेश्वर सहित 13 विद्वानों को सम्मानित किया गया।

सूचना

आर्यावर्त केसरी की भव्य स्मारिका अब 16 अप्रैल 2013 के स्थान पर 16 मई 2013 को प्रकाशित की जा रही है। कृपया अपनी अतिरिक्त प्रतियों के विषय में अवगत करा दें। धन्यवाद,

-सम्पादक

दिल्ली राज्य योगासन प्रतियोगिता धूमधाम से सम्पन्न

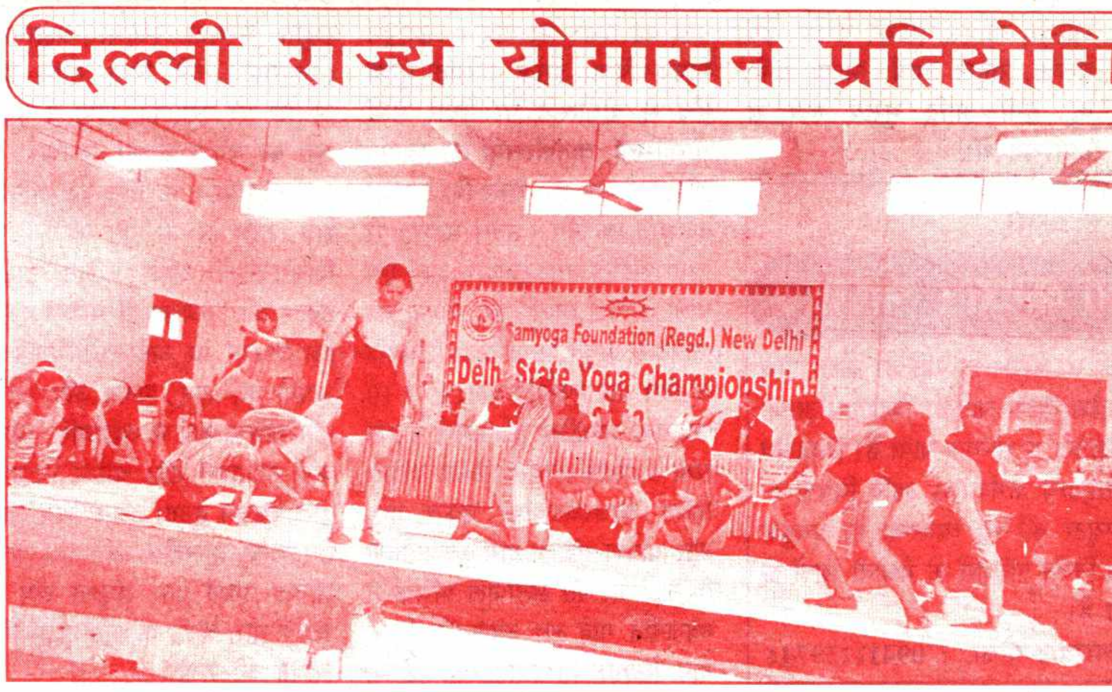

प्रवीण आर्य
दिल्ली।

समयोग फाउण्डेशन के तत्वावधान में दिल्ली राज्य योगासन प्रतियोगिता का आयोजन बड़ी धूम-धाम के साथ आर्यसमाज ग्रीन पार्क के कॉन्फ्रेन्स हॉल में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रतियोगियों ने अपने अद्भुत प्रदर्शन, संगीतमय योग से दर्शकों का मन मोहित कर दिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन दक्षिण दिल्ली के वेदप्रचार मण्डल अध्यक्ष चतर सिंह नागर ने किया।

उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि योगाचार्य मायाप्रकाश त्यागी ने 'समत्वं योग उच्यते' की व्याख्या करते हुये कहा कि जीवन में सम रहना अर्थात् हर परिस्थिति में आनंदमय रहना ही योग है। विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र गुप्ता, दीपक गुप्ता (मोडा कॉकटेल) ने समयोग फाउण्डेशन के कार्यों की सराहना करते हुये योग को जीवन में व्यवहारिक रूप में धारण करने पर विशेष बल दिया। स्वामी वेदानन्द सरस्वती (अध्यक्ष, वैदिक साधना आश्रम ट्रस्ट) तथा आर्य समाज ग्रीन

शेष पृष्ठ २......

आर्यसमाज भीमगंज मण्डी कोटा के प्रतिनिधिगण- केसरी।

ऋषि बोधोत्सव टंकारा से लौटे आर्यजन

राजेन्द्र कुमार आर्य
कोटा (राजस्थान।

ख्यातिप्राप्त वैदिक विद्वान व आर्यसमाज राजस्थान प्रान्त के उपप्रधान शिवनारायण उपाध्याय के नेतृत्व में कोटा के आर्यजन टंकारा (गुजरात) महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि में आयोजित बोधोत्सव में सम्मिलित हुए।

वैदिक प्रवक्ता राजेन्द्र आर्य ने बताया कि टंकारा में हीरो होण्डा के बृजमोहन मुंजाल की अध्यक्षता में बोधोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन किया गया। आर्यजनों ने वह शिवमन्दिर भी देखा, जहां स्वामी दयानन्द को सच्चे शिव का बोधज्ञान हुआ था। ऋषि दयानन्द का जन्मगृह, द्वारका, बेट द्वारका, सोमनाथ व गिरि कानन भी आर्यजनों ने घूमा।

ऐसे समारोहों से प्रेरणा प्राप्त होती है। इस यात्रा में प्रमुख आर्य राजेन्द्र आर्य, राधेश्याम शर्मा, भेरूलाल आर्य व उषा आर्या थे।

वेदिक धर्म दीक्षा का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न

रणजीत विवित्सु
नवापारा (उड़ीसा)।

होली महोत्सव के शुभ अवसर पर 24 मार्च को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ प्रधान वानप्रस्थ विशिकेशन शास्त्री के ब्रह्मत्व में विभिन्न मतावलम्बी 200 से अधिक परिवारों ने अत्यंत उत्साह और श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म की दीक्षा ली। इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्हांने भारी संख्या में उपस्थित श्रद्धालु सज्जनों से आग्रह किया कि देश की अखण्डता और एकता की रक्षा करना है, तथा देश में सुख और शांति स्थापित करनी है, तो हम सभी को सत्य सनातन वैदिक धर्म अपनाने का यत्न करना चाहिए। यह सारा आयोजन परमानन्द राऊत, वासुदेव होता, एवं पं0 कृष्ण शास्त्री आदि के पुरुषार्थ से हुआ। तथा आर्यजगत के सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

वार्षिकोत्सव आयोजित

यशपाल आर्य
दिल्ली।

आर्यसमाज नांगलोई का 113वाँ वार्षिकोत्सव 17 मार्च रविवार को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य परमदेव मीमांसक एवं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद्श्रमी ने अपने प्रवचनों में वैदिक चिन्तन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद सार्वभौमिक ग्रन्थ हैं। मुख्य वक्ता डॉ. वीरेन्द्र आर्यव्रत, भजनोपदेशक पण्डित नरेश 'निर्मल', पण्डित विजयानन्द ने प्रवचनामृत की वर्षा की।

इस अवसर पर हेमचन्द्र भारद्वाज, कृष्णप्रसाद आर्य, भलेराम आर्य, प्रभुदयाल आर्य, आर्य रमेश रोहिल्ला, राजेन्द्र आर्य, कर्मवीर आर्य, आचार्य वाचस्पति, भोपाल आर्य, महावीर आर्य, कुलदीप यादव, कृष्णलाल आर्य, चतर सिंह रोहिल्ला एवं कृपाल सिंह आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे। मंच का संचालन आचार्य वाचस्पति ने किया।

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल, एरवा कटरा (ओरैया)

नवीन छात्रों का प्रवेश 15 मई से प्रारम्भ हो रहा है। कक्षा पांच उत्तीर्ण विद्यार्थियों का परीक्षोपरांत प्रवेश किया जाएगा। विद्यालय उ0प्र0 संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद्, लखनऊ से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन, पौरोहित्य कर्मकाण्ड आदि विषयों के अलावा आधुनिक विषयों एवं कम्प्यूटर की भी व्यवस्था है। इच्छुक अभिभावक शीघ्रातिशीघ्र संपर्क करें। निर्धन परिवारों के मेधावी छात्रों के लिए शुल्कादि के छूट का प्रावधान है।

सम्पर्क सूत्र : आचार्य राजदेव शास्त्री, मोबा. : 09411239744

उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर का एक ग्राम है सुहाहेड़ी

चतुर्वेद पारायण यज्ञ ने बदला गांव का परिवेश

सुमन कुमार वैदिक

वर्ष का माघ माह प्रत्येक ग्रामवासियों के मन को प्रफुल्लित कर देता है। उनका मन मयूर नाच उठता है, क्योंकि इस समय पूरा गांव स्त्री-पुरुष आठ दिन के चतुर्वेद पारायण यज्ञ की तैयारी करता है। ग्रामीणों का मानना है कि इस यज्ञ ने इस गांव की काया पलट कर दी।

आज से 31 वर्ष पहले यह गांव भी भारत के अन्य गावों की तरह था। यहां रुढ़िवाद और अन्धविश्वास की जड़ें गहरी थीं आपसी द्वेष, प्रतिष्ठा की लड़ाई में श्रृंखलावद्ध नरबली दी गयी। गांव में रिश्ते होने बन्द हो गये थे। आर्य समाज क्या है किसी को पता नहीं था। इसी गांव में स्वाध्यायशील,श्याम सिंह रहते थे। जिन्हें कहीं ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त के प्रवचनों की पुस्तक मिल गयी। पुस्तक से स्वयं तो प्रभावित हुए ही बल्कि उसके रंग की बौछार पूरे गांव में बिखेरने लगे। प्रतिदिन ओमकार सिंह डेरीवालों के घर में गांववाले एकत्र होकर प्रवचन सुनाने लगे। प्रवचन के बारे में ग्रामवासियों में चर्चा हुई कि जो एक माह तक ऐसे प्रवचन सुन लेगा वह घर बार छोड़ देगा। ब्रह्मचारी जी के प्रवचन देखने की लालसा ने कुछ ग्रामवासियों बरनावा यज्ञ के दर्शन करा दिये। जब 1965 में वह लाक्षागृह के चतुर्वेद पारायण यज्ञ में पहुंचे। तब उनके अंदर भाव जगा कि यह यज्ञ तो हम अपने गांव में भी करा सकते हैं। ब्रह्मचारी जी से यज्ञ की तिथि ली तथा तब से गांव में यज्ञ कराने की श्रृंखला प्रारम्भ हो गयी, किन्तु यह गंगा जिसकी इच्छा होती, उसी के घर बहती। पूरे गांव को नहीं सींच रही थी। गांव के ही धर्मपाल के यहां कोई संतान न थी। यज्ञ के बाद उनके यहां एक पुत्र हुआ, जिसका नाव वेदपाल रखा गया। यज्ञ और ब्रह्मचारी के प्रति श्रद्धा और आकर्षण बढ़ता गया। ग्रामवासियों ने यज्ञ कराने प्रारम्भ कर दिये। वृष्टि से समष्टि में जाने वाले प्रवचनों को सुनकर ग्रामवासी गजेन्द्र ने अपने गुरु श्याम सिंह से इच्छा रखी कि इस व्यक्तिगत यज्ञ को हम क्यों न सामूहिक रुप में करायें। तबसे यह यज्ञ सामूहिक रुप से मिलकर कराया जाने लगा। सौवीर सिंह का कहना है कि मैं और मेरे मित्र गजेन्द्र जब बाल्य अवस्था में थे तब हमें यज्ञ का ज्ञान नहीं था। हम तो यह कहते थे कि बुड्ढ़ा लेटेगा, नाड़ हिलायेगा। यह देखते-देखते हम बड़े हो गये और कोहतूल ने हमें यज्ञ के प्रति निष्ठावान बना दिया। सन् 1992 में ब्रह्मचारी कृष्णदत्त का शरीर पूर्ण होने के पश्चात् ब्रह्मचारी वेदपाठी गुरुकुल बरनावा से आते रहे। किन्तु उनकी ब्रह्मचारी जी के प्रति श्रद्धा न होने से तथा चतुर्वेद पारायण यज्ञ के प्रति अरुचि से ग्राम में दो पार्टी बन गयीं। सन् 1999 में प्रधान गजेन्द्र ने दोनों पर्टियों को समाप्त करने के लिए त्यागपत्र की घोषणा कर दी। ज़िससे पुनः गांव का संगतिकरण हो गया तथा चर्तुवेद कराने के संकल्प से पुनः य़ज्ञ ज्योति एक स्थान पर प्रज्वलित की गयी।

प्रथम पृष्ठ के शेष : टंकारा में ऋषि बोधोत्सव..

दिल्ली राज्य योगासन..

पार्क के मंत्री गोविन्दराम ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

निर्णायक मण्डल के रूप में डॉ. राजकुमार, डॉ. कमल योगी, आचार्य राकेश शास्त्री एवं सचिन योगी रहे। गुरूकुल चोटीपुरा ने प्रथम तथा लक्ष्मीबाई कॉलेज ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। समयोग फाउण्डेशन के संस्थापक डॉ. दानवीर विद्यालंकार ने योग ध्यान को विश्व स्तर पर बचपन से अपनाने पर विशेष बल दिया तथा विशेष अभियान चलाने का संकल्प लिया तथा पूरे देश में अधिक से अधिक योग प्रतियोगितायें कराने का वादा किया। इस अवसर पर कु. ज्योति, मनीष खत्री, कु. तरूणा, अग्निदेव शास्त्री, वी.एस.एस.के. प्रसाद, हर्ष बवेजा, राहुल आर्य, आशा रानी, कु. हनी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

पर प्रवचन इस दिन का मुख्य आकर्षण था।

युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम पिछले पांच वर्षों से ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बालीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन इत्यादि का कार्यक्रम दो सप्ताह पूर्व से चलता है, जिसमें विजयी टीमों को इस सत्र में पारितोषिक दिये जाते हैं। इस अवसर पर ही पारितोषिक के रूप में शील्ड, ट्रॉफी, स्मृति चिह्न, तथा नकद राशि के साथ प्रमाण पत्र भी दिये गये।

इस सत्र के संयोजक हँसमुख भाई परमार, ट्रस्टी- टंकारा थे। वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत के रात्रि सत्र में अरुणा सतीजा द्वारा वेदों में नारी का स्थान पर अपना ओजपूर्ण भाषण दिया। इसके उपरांत मुख्य मंच से बोधोत्सव पर पधारे सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों का स्वागत शॉल एवं मानराशि देकर किया गया। तदुपरांत बिजनौर (उत्तर प्रदेश) से पधारे संगीताचार्य कुलदीप आर्य एवं पत्नी कविता आर्या द्वारा भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। शिवरात्रि के दिन यज्ञ पूर्णाहुति प्रात: 8 से 10 बजे तक आयोजित हुई। इसके उपरांत सभी उपस्थित जनसमूह टंकारा परिसर स्थित ध्वजस्थल पर एकत्र हुए, और योगेश मुंजाल द्वारा ध्वजारोहण किया गया। पं0 सत्यपाल पथिक ने ध्वजगीत गाते हुए ध्वजमहिमा का गान किया। शोभायात्रा को योगेश मुंजाल एवं स्थानीय.विधायक मोहन भाई कुण्डारिया ने ओ3म् ध्वज फहराकर प्रारम्भ किया, जिसमें भारत भर से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

मुख्य श्रद्धांजलि सभा मिठाईलाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, और इसमें मुख्य अतिथि के रूप में योगेश मुंजाल उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति विशेष सम्मान के रूप में किरण अमित पटेल (भुज) को 'टंकाराश्री', अमृतलाल मेघजी भाई बुद्धदेव (टंकारा) एवं विद्यामित्र ठुकराल (दिल्ली) को 'टंकारा रत्न', तथा अशोक दड़ंगा को 'टंकारा मित्र' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी श्रद्धानन्द (महाराष्ट्र) को दिया गया। इस अवसर पर एस0के0 शर्मा ने पूनम सूरी का संदेश पढ़कर सुनाया।

शिवरात्रि के दिन का अन्तिम सत्र रात्रि 8 से 11 बजे तक शिवराजवती आर्य, वरिष्ठ ट्रस्टी, टंकारा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आए ऋषिभक्तों ने अपनी कविताएं, भजन और शब्दों द्वारा संक्षिप्त रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की। तदोपरांत डॉ0 धर्मेन्द्र विद्यार्थी द्वारा प्रवचन हुआ। इसके बाद आर्य उपदेशकों कुलदीप आर्य एवं पत्नी संगीता आर्या द्वारा संयुक्त रूप से भजनों द्वारा ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

न मानवाधिकार आयोग चेता न सरकार, क्योंकि वे हिन्दू हैं : विहिप

विनोद बंसल
नई दिल्ली

छोटी-छोटी बातों पर संवैधानिक अधिकारों व मानवाधिकारों के उल्लंघन की दुहाई देने वाले राजनेता, मानवाधिकारवादी व समाज सेवी पता नहीं, कहां चले जाते हैं, जब हिन्दुओं के उत्पीड़न व उनके मानवाधिकारों के गम्भीर उल्लंघन की घटनाएं होती हैं। पाकिस्तान में मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा हिन्दुओं के साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है, यह किसी से छुपा नहीं है। विहिप दिल्ली के उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद गुप्ता ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी कट्टरपंथियों से अपना धर्म व जान बचाकर भारत में शरण लेने आए 480 हिन्दुओं की सहायता या नागरिक सुविधाओं की बात तो दूर, केन्द्र या दिल्ली सरकार का कोई भी प्रतिनिधि आज तक जिहादी दरिंदों के सताए इन लोगों के हालचाल तक पूछने नहीं पहुंचा है। शायद इसलिए कि वे हिन्दू हैं। और तो और, विश्व हिन्दू परिषद् व दिल्ली की अन्य हिन्दूवादी संगठनों के अलावा, एक भी राजनेता, तथाकथित समाजसेवी या मानवाधिकारवादी संगठन उनके पास तक नहीं फटका है।

विहिप, दिल्ली के मीडिया प्रमुख विनोद बंसल ने बताया कि पाकिस्तान से आए 480 हिन्दुओं के एक माह के वीसा की अवधि समाप्त होने जा रही है, किंतु किसी भी सरकारी या गैर सरकारी विभाग से कोई राहत की खबर नहीं है। इस संबन्ध में मार्च में ही भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, विदेशमंत्री, कानून मंत्री, दिल्ली के उपराज्यपाल, व मुख्यमंत्री के साथ सभी संबन्धित सरकारी विभागों सहित भारत व संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकार आयोगों को भी पत्र भेजा जा चुका है। किंतु किसी के पास न तो इन पाक पीड़ितों का दर्द सुनने की फुर्सत है, और न ही किसी ऐसी कार्यवाही की, जो पाकिस्तानी दरिंदों पर अंकुश लगा सके।

मानवाधिकार आयोग के समक्ष विहिप के नेतृत्व में प्रदर्शन करते जन- केसरी।

इन 480 लोगों में से एक छः माह की अबोध बालिका तो भारत आने के बाद गत तीन अप्रैल को इस दुनिया से विदा ले चुकी। अब इस जत्थे में सिर्फ 479 ही बचे हैं। यूं तो विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल, हिन्दू महासभा, हिन्दू सेना, शिव सेना, आर्यसमाज इत्यादि संगठनों के कार्यकर्ता समाजसेवी नाहरसिंह द्वारा बनाए गये पाक शरणार्थी शिविर में पीड़ितों की मदद के लिए लगे ही हैं, किंतु क्या किसी मानवाधिकार आयोग या सरकार का कोई प्रतिनिधि भी उन लोगों की आवाज को सुनेगा, जिन्होंने देश छोड़ा, लेकिन स्वधर्म को नहीं छोड़ा। विश्व हिन्दू परिषद् दक्षिणी दिल्ली के मंत्री विजय गुप्ता ने हिन्दू समाज से अपील की है कि वे अखण्ड भारत के अपने जिगर के इन टुकड़ों की सहायता हेतु आगे आएं, तथा इनकी रोजमर्रा की जरूरतों, यथा- भोजन, राशन, दवाइयां, बर्तन आदि की पूर्ति हेतु 09212376123, 09210110863 या 09212126309 मोबाइल नम्बरों पर संपर्क करें, या 16, अम्बेडकर कालोनी, बिजवासन, नई दिल्ली-110061 के पते पर भेजें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा।

ग्राम जगनपुर में 26 से 29 मार्च तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ गजब सिंह प्रधान एवं अजयपाल भड़ाना द्वारा किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्य वैद्य विक्रमदेव शास्त्री थे, जिन्होंने यज्ञमान दम्पत्ति जिते भगत से वेदमंत्रों द्वारा आहुतियां प्रदान करायीं।

यज्ञ के पश्चात् अपने उद्बोधन में वैद्य जी ने कहा कि मात्र भौतिक, शारीरिक उन्नति से किसी का जीवन उन्नत नहीं बन सकता। जब तक विचारों और मन की वृत्तियों को शुद्ध अन्न से पवित्र नहीं किया जाएगा, तब तक शासक अपने राष्ट्र को उन्नत नहीं दे सकता। गृहस्थी अपने परिवार को शुद्ध पवित्र नहीं बना सकता, और गुरु अपने शिष्य का निर्माण नहीं कर सकता। 29 मार्च को पूर्णाहुति के पश्चात् ब्रह्मभोज दिया गया।

आर्यसमाज की रजत जयन्ती सम्पन्न

वेदरत्न आर्य
अटवा वैक (उन्नाव)।

आर्यसमाज अटवा वैक की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती समारोह का आयोजन बड़ी ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ स्थानीय सरदार पटेल विद्यालय के प्रांगण में 22 से 24 फरवरी तक मनाया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा दिल्ली से पधारे सौम्यानन्द सरस्वती ने अपने प्रवचनों में वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए मानव जीवन के उत्थान, समाजोत्थान, राष्ट्रोत्थान के विषयों पर विस्तार से चर्चा की। बरेली के पं0 सत्यदेव शास्त्री ने सुमधुर भजनों से जनता को मंत्रमुग्ध किया, तथा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन पर जोर दिया। लखनऊ से पधारे विमल किशोर ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश की एकता, अखण्डता एवं शक्ति का एकमात्र रास्ता वेद है। वेदों में भौतिक विज्ञान तथा आध्यात्मिक विज्ञान है। इन्हीं दोनों से राष्ट्र के चरित्र का निर्माण होता है। कार्यक्रम को सफल बनाने में सूबेदार सिंह आर्य, रमेश चन्द्र आर्य, सुभाषचन्द्र आर्य, सुरेश कुमार आर्य, राधेलाल पटेल, गोपीकृष्ण पटेल, शिवसिन्धु गुप्त, अरुण विक्रम सिंह आदि का सहयोग प्रशंसनीय रहा। कार्यक्रम में ग्राम के सभी आर्य नर-नारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

अनुरोध

विज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि कृपया समय-समय पर आर्यावर्त केसरी के कलेवर, उसकी विषयवस्तु के विषय में अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहें ताकि तद्नुसार आवश्यक परिवर्तन/परिवर्द्धन करते हुए उसे और भी अधिक उपादेयी बनाया जा सके।
धन्यवाद, -सम्पादक

मुस्लिम नगरी हुई यज्ञमय, पूर्णाहुति के अवसर पर उमड़ा जनसैलाब

चतुर्वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर उपस्थित जनसमूह - केसरी।

सुमनकुमार वैदिक
मुलसम (बागपत)।

यज्ञनगरी आजमपुर मुलसम उन गिने हुए चार स्थानों में से एक है, जहां प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक ही स्थान पर पांच वेदियों में आठ दिन तक किया जाता रहा है। इस वर्ष 28 फरवरी से 7 मार्च तक अत्यंत श्रद्धापूर्वक योगाचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान कर, एवं विद्वानों के आख्यान सुन धर्मलाभ उठाया। पूज्यपाद कृष्णदत्त जी (त्रेतायुगीन श्रृंगी ऋषि) के शिष्य यज्ञ के ब्रह्मा योगाचार्य अरविन्द ने पूर्णाहुति के अवसर पर कहा कि मनुष्यों को कर्तव्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

मनुष्य को अपने प्रति इन्द्रियों को बलवान बनाना, इन्द्रियों को यशस्वी बनाना एवं प्राणायाम के माध्यम से शरीर और मन को पुष्ट और एकाग्र करना व पापों को दूर करना चाहिए।

ईश्वर के प्रति मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परमपिता परमात्मा को प्राप्त करे। यही इस मानव का लक्ष्य है। मनुष्य इस अवस्था में पहुंचकर संसार के समस्त क्लेशों से मुक्त हो जाता है, तथा अमृत को प्राप्त कर लेता है। मानव जीवन की समस्त कर्तव्यों की योजना एवं उसकी पूर्ति का साधन केवल 'यज्ञ' में ही निहित है।

इस मौके पर स्वामी सत्यवेश ने अपनी कविता के माध्यम से संसार की दशा का ज्ञान कराया। स्वामी ब्रह्ममुनि, आचार्य विजयपाल, रोहित, अमित, अंकुर भारद्वाज ने अपनी यज्ञवेदियों पर वेदोपदेश व सस्वर पाठ कर, सभी को मंत्रमुग्ध किया। यज्ञ में मुख्य यजमान जगपाल, जितेन्द, बब्लू आदि रहे।

इस अवसर पर ग्राम प्रधान कृष्णपाल, मा0 संजीव, टिंकू, ब्रह्मपाल, ओमपाल, हरपाल, जयपाल, हरेन्द्र आदि मौजूद रहे। सभी ग्रामवासियों द्वारा प्रतिवर्ष इस यज्ञ को कराने का श्रेय ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को जाता है। उनके प्रेरणा से लाक्षागृह बरनावा, ग्राम सुवाहेड़ी (बिजनौर), इन्दुपुर (मेरठ) तथा मुलसम (बागपत) में प्रतिवर्ष सामूहिक यज्ञ किया जाता है।

आर्ष तिथि पत्रक (पंचाग) के अनुसार ही पर्व मनाएं : दार्शनेय लोकेश

सुमन कुमार वैदिक
कोटद्वार।

गुरुकुल कर्णवास परिसर में बसन्तोत्सव पर्व श्री मोहनकृति आर्य तिथि पत्रक अनुसार चैत्र शुक्ल पंचमी (मधुमास 25 गते) के दिन मनाया गया, जबकि अन्य सभी पंचांगों के अनुसार बसंत पंचमी की तिथि 14 फरवरी थी। यह विसंगति अन्य सभी पंचांगो में ऋतु अनुसार पर्व न होने तथा संक्रान्तियों की तिथि सूर्य की वास्तविक भौगोलिक स्थिति अनुसार न होने के कारण हो रही है। यह बात वैदिक पंचांग के सम्पादक आचार्य दार्शनेय लोकेश ने इस इवसर पर अपने उद्बोधन में कही। सत्य को जानने और मानने के लिए सदा उद्यत रहने वाले आर्यों का ध्यान भी अभी तक इस ओर नहीं गया। जाने-अनजाने वे भी पर्व, जन्मदिन उन्हीं पंचांगों के आधार पर मनाते आ रहे हैं। उसी तथि और मास संकल्प से कर, असत्य का दामन पकड़ रहे हैं। नवसंवत्सर का प्रारम्भ बसंत ऋतु में मधु सौर मास (चैत्र चन्द्रमास) से प्रारम्भ होता है। बसन्त पंचमी, जो बसन्त ऋतु का त्योहार है, पंचांगों में शिशिर ऋतु माघ मास (तपस्य सौर मास) में मनाया गया, जबकि बसंत पंचमी आज बसंत ऋतु में चैत्र शुक्ल पंचमी को होनी चाहिए। बसंत कब प्रारम्भ हुआ, इसकी सूचना केवल वैदिक पंचांग ही नहीं देता, प्रकृति में वे परिवर्तन, पेड़-पौधों में आये नये पत्ते, आम के वृक्ष का बौर, तथा कोयल की कू-कू स्वत: देने लगती हैं कि बसन्त आ गया। भ्रमित पंचांगों से होली, जो शिशिर ऋतु का अन्तिम मास फाल्गुन का पर्व है, शिशिर के स्थान पर बसंत ऋतु में मनाया जा रहा है। इन पंचांगों के अनुसार चैत्र माह 28 मार्च से प्रारम्भ माना जा रहा है, जबकि वैदिक गणना से चैत्र मास का प्रारम्भ एक माह पूर्व मधु सौर मास और बसंत ऋतु के साथ हो चुका है। बैसाखी, जो बसन्त ऋतु के मध्य का पर्व है, को बसंत ऋतु में 21 मार्च को न मनाकर ग्रीष्म ऋतु में 14 अप्रैल को मनाकर प्रसन्न हो रहे हैं। हमें शुद्ध आर्ष तिथि पत्रक को पूर्ण मान्यता देनी चाहिए तथा उसके अनुसार संकल्प पाठ करना चाहिए, जिसके अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 12 मार्च को मधुमास, बसन्त ऋतु में थी। 11 अप्रैल की तिथि में सौर मास माधव बैसाख का प्रारम्भ हो रहा है। अन्य सभी पंचांगों के अनुसार रामनवमी भी माधव मास में होगी, जो श्रीराम की सही जन्मतिथि नहीं है। रामायण के अनुसार राम का जन्म मधु मास में हुआ था। ऋतुएं सूर्य के आधार पर बनती हैं, चन्द्रमा से उनका कुछ भी लेना-देना नहीं है।

आचार्य लोकेश ने कहा कि गलत पंचांग के आधार पर बनायी गयी जन्मपत्री का औचित्य भी सही नहीं है। स्वामी दयानन्द ने जन्मपत्री को शोकपत्री कहा, किंतु प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व, यज्ञ से पूर्व ऋतु, मास, दिवस से संकल्प लेने का विधान बनाया। गलत माह, ऋतु बताने वाले तिथि पत्र/ पंचांग से हम गलत संकल्प कर रहे हैं, जिन्हें शुद्ध वैदिक पंचांग द्वारा ही सही किया जा सकता है। जिन्होंने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदोत्पत्ति विषय पढ़ा है, वे जानते हैं कि अशुद्ध संकल्प से कालगणना करना अमर्यादित चर्या है, जो कि शुद्ध वैदिक तिथिपत्रक के अभाव में संभव नहीं है। अज एकमात्र शुद्ध वैदिक पंचांग श्रीमोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक है। इस अवसर पर गुरुकुल के आचार्य विश्वपाल जयन्त ने घोषणा की कि उत्सव शुद्ध वैदिक पंचांग से ही मनाये जाएंगे। पंचांगकर्ता से उनके पते- 'आचार्य दार्शनेय लोकेश, महासचिव, अखिल भारतीय पंचांग सुधार समिति, सी-276, गामा-प्रथम, ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0)-201310', फोन-01204271410 तथा ईमेल darshaney.smkatp@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

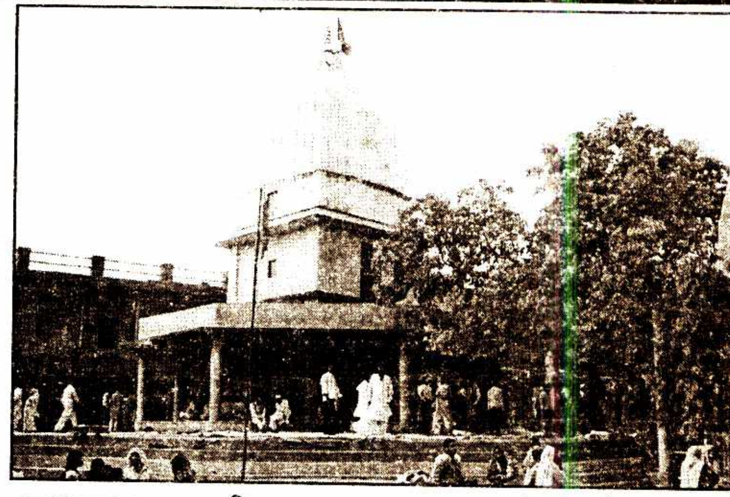

लाक्षागृह बरनावा स्थित मुख्य यज्ञशाला, यहां प्रतिवर्ष पांच यज्ञ वेदियों पर होता है भव्य चतुर्वेद पारायण महायज्ञ- केसरी।

बरनावा में धूमधाम से हुआ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

गुरुवचन शास्त्री/वैद्य विक्रम देव
बरनावा (बागपत)

17 से 24 मार्च तक लाक्षागृह (बरनावा) में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के शिष्य चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराने वाले एकमात्र आचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया, जिसमें अथर्ववेद परायण यज्ञ गुरुवचन शास्त्री, ऋग्वेदपारायण यज्ञ ब्रह्ममुनि (किंकर जी, शाहपुर) यजुर्वेद पारायण यज्ञ विजयपाल, सामवेद पारायण यज्ञ विक्रमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने अपनी आहुतियां जहां दीं, वहीं आर्यजगत के विद्वानों के उद्बोधन से ज्ञानार्जन भी हुआ।

ऐतिहासिक लाक्षाग्रह परिसर में आर्ष विद्यापीठ कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की आचार्या डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती ने अथर्ववेद के मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि दु:स्वप्न, निर्धनता, निराशावादिता, वाणी की कठोरता आदि जीवन के बहुत बड़े अभिशाप हैं। सुख, शांति, मुक्ति चाहने वालों को इससे बचना चाहिए। इसके बचने के वेद में वर्णित ही मुख्य उपाय है।

रात्रि में सोने से पूर्व शिव-संकल्पों के मंत्रों का पाठ, उषा जागरण में प्रात: जागरण मंत्रों का पाठ इन दो उपायों से व्यक्ति दु:स्वप्नों से बच सकता है, उसका जीवन उत्तम बन सकता है।

आचार्य गुरुवचन शास्त्री ने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का ज्ञान मानव के लिए अमृत का कार्य करता है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि चार वेदों का ज्ञान ऋषियों पर परमात्मा ने एक साथ उतारा था, तो इन चारों वेदों का पाठ भी एक साथ होना चाहिए। वेद की विशुद्ध धारा है। इसे अपनाने से अच्छे सच्चे याज्ञिक बने। परमात्मा दयालु है, जैसे पिता की सम्पत्ति में सभी बच्चों का हिस्सा होता है, उसी प्रकार परमात्मा की दया सभी पर होने से उसकी सम्पत्ति का सभी भोग करते हैं, किंतु उसकी कृपा को सब नहीं पा सकते। उसके लिए उसकी उपासना करनी आवश्यक है।

इस अवसर पर वीरपाल राठी (विधायक), राकेश टिकैत (किसान यूनियन), स्वामी आर्यवेश, माया प्रकाश त्यागी, डॉ0 अशोक आर्य, डॉ0 बीना रुस्तगी (आर्यावर्त केसरी), डॉ0 जयपाल सिंह (प्रितिनिधि- दैनिक जागरण), रविप्रकाश (वैदिक अनुसंधान समिति), रमेश चन्द्र गुप्ता (गांधीधाम समिति) सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने आहुतियां दीं, तथा ब्रह्मभोज में सम्मिलित हुए।

दो विदुषी कन्याओं ने ग्रहण की नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा

कोमल कुमार आर्य
नवापारा (उड़ीसा)।

आर्यजगत के प्रसिद्ध संन्यासी गुरुकुल आश्रम आमसेना आदि अनेक संस्थाओं के संस्थापक उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म एवं देश की सेवा करने के लिए नये कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने की परम्परा प्रारम्भ कर रखी है। इस पर अब तक पचासों युवक दीक्षा लेकर देश के विभिन्न भागों में एवं गुरुकुल द्वारा संचालित संथाओं का संचालन करने में संलग्न हैं।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नैष्ठिक दीक्षा का दृश्य- केसरी।

गत दिसम्बर महीने में नैष्ठिक दीक्षा के स्वर्ण जयन्ती पर ही दो ब्रह्मचारियों ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपना जीवन समाज के लिए अर्पित किया। परन्तु कन्याएं प्राय: नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेतीं। पहले सन् 2002 में दो-तीन कन्याओं ने नैष्ठिक दीक्षा ली थी, अब स्वामी जी की अन्तर्प्रेरणा से उत्साहित होकर शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण ब्रह्मचारिणी निशा आर्या एवं ब्रह्मचारिणी सुब्रता आर्या ने अत्यंत श्रद्धा के साथ नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण कर, अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं नारी जाति के उत्थान के लिए ग्रहण किया।

इस अवसर पर सभी कन्याएं बैण्ड बाजे के साथ झूम-झूम कर नारे लगा रही थीं। जब वे यज्ञ में आहुति देकर स्वामी धर्मानन्द जी से नये वस्त्र लेकर आशीर्वाद लेने के लिए पुन: पंडाल में आयीं, तो उस समय सभी का उत्साह अद्भुत एवं अपूर्व था। इस अवसर पर गुरुकुल आश्रम आमसेना कन्या गुरुकुल कोसरंगी की छात्राओं के साथ अनेक विद्वान खरियार रोड आदि के संभ्रान्त नागरिक भी उपस्थित थे।

नवसंवत्सर, आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ के

उपलक्ष्य में भव्य स्मारिका का प्रकाशन

महोदय/महोदया,

आपको जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज स्थापना दिवस, नव सम्वत्सर तथा आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ के पावन उपलक्ष्य में आर्यावर्त केसरी द्वारा एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन ११ अप्रैल २०१३ के स्थान पर अब १६ मई २०१३ को किया जा रहा है यह स्मारिका एक ऐतिहासिक, स्मरणीय तथा संग्रहणीय अंक के रूप में होगी। दो वर्ष पूर्व भी आर्यावर्त केसरी द्वारा इस उपलक्ष्य में एक भव्य विशेषांक का प्रकाशन किया गया था जिसकी सभी आर्यजनों व संस्थाओं द्वारा मुक्त कंठ से सराहना की गयी। कृपया पाठकगण और संस्थाएं अपना आदेश भी अभी से अंकित करा दें कि उन्हें कितनी प्रतियां चाहिए। एक प्रति का मूल्य-25/- मात्र रहेगा। धन्यवाद,

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, मोबा.: 09412139333, 08273236003

कैसे हो विश्व कल्याण

आर्यसमाज का छठा नियम है- 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' हमें इस नियम पर विचार करना चाहिए और तद्नुसार विश्व के कल्याण के पथ की ओर अग्रसर होना चाहिए। वास्तव में आर्यसमाज एक ऐसा संगठन है जो संकीर्णताओं से ऊपर उठकर समग्र का चिन्तन करता है। निश्चय ही, यह व्यापक आन्दोलन का नाम है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण समाज को एक नई चेतना देने वाली क्रान्ति है। यह एक आग्रह है जो स्वदेशी, स्ववेशभूषा, स्वराज्य, स्वभाषा से लेकर नारी मुक्ति, अछूतोद्धार, दलितोत्थान, जातिवादोन्मूलन, विधवा विवाह, बाल विवाह निषेध, शांति सद्भाव, यज्ञ, वैदिक शिक्षा प्रणाली, वर्णाश्रम व्यवस्था, गोरक्षा, मांसभक्षण निषेध आदि का प्रबल पक्षधर है, जिसकी एक-एक मान्यता सत्य सनातन वेद सम्मत है। यह एक ऐसा सार्वजनिक संगठन है रूढ़िवाद के स्थान पर जो विज्ञानवाद अर्थात् तर्क को मान्यता प्रदान करता है। निसन्देह, कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहां आर्यसमाज की विशद भूमिका न हो।

आज समाज बुराईयों, जड़ताओं, अंधविश्वासों व रूढ़ियों की गिरफ्त में है। नित् नये अवतारों, गुरूडमवादों का उदय हो रहा है। चारों ओर भय, कटुता, धोखाधड़ी, प्रपंच, भ्रष्टाचार, अवज्ञा, आतंकवाद का वातावरण है। ऐसे में आर्यसमाज के सशक्त आंदोलन की पहले से भी अधिक प्रबल आवश्यकता है। किन्तु यदि आर्यसमाजी संस्थाएं भवनों की चार दीवारों तक सीमित होकर रह जाएंगी और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के संकल्प का उद्घोष करने वाले आर्यजन आपसी विद्वेष, उठापटक, मुकदमेबाजी, जातिवाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, पदलोलुपता व धनलिप्सा आदि विकृतियों का शिकार होकर रह जाएंगे तो विश्व का कल्याण कैसे होगा? क्या यह विचारणीय नहीं, कि अकेले एक ऋषिवर दयानन्द ने सम्पूर्ण विश्व में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का सूत्रपात कर दिया किन्तु आज सारे संगठन मिलकर के भी एक दयानन्द पैदा नहीं कर पा रहे। वस्तुतः आर्यसमाज के मार्ग से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। निश्चय ही, आर्यसमाज का छठा नियम बहुत सारे निहितार्थ लिये है। यह अकारण या निरापत नहीं है।

जीवन को सुखमय कैसे बनाएं?

देवराज आर्यमित्र, नई दिल्ली

हम देखते हैं कि ईश्वर ने हमारे सुख के लिए जलवायु, सूर्य, चन्द्रमा, औषधियां, वनस्पतियां आदि सुविधाएं उत्पन्न करके यह सृष्टि (दुनिया) सुखमय बनायी है। फिर ये अनेक प्रकार के दुख क्यों आते हैं, जिनको हम भोग रहे हैं?

चिन्तन करने से आभास होता है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, परन्तु वह भूल जाता है कि कर्मों का परिणाम (फल) भोगने में न्यायकारी ईश्वर के पूरी तरह अधीन है। खोटे, कुकर्मों के द्वारा दुखों को वह स्वयं निमंत्रण देता है। कष्ट आने पर भी सही रास्ते पर नहीं चलता। अज्ञानता के अन्धकार में तांत्रिकों के जाल में फंसकर भटकता रहता है। स्वार्थ की संकीर्णता में जकड़ा रहता है। विषय-वासनाओं की कीचड़ में अपने-आप को क्षीण, हीन बना लेता है। मनुष्य जीवन को दूषित करके पशु-पक्षियों की तरह मर जाते हैं। क्या मनुष्य-जीवन का यही लक्ष्य है कि हम आजीवन घेरे में रहकर कष्ट भोगते हुए दुनिया से चले जाएं? नहीं, यह सर्वश्रेष्ठ चोला मनुष्य को आनन्द (मोक्ष) प्राप्त करने के लिए मिला है। सोचिए, ऐसा कौन-सा प्राणी है, जो सुख, आराम नहीं चाहता। चींटी से हाथी तक समस्त प्राणीजगत सुख प्राप्त करने के लिए इधर से उधर घूम रहा है। मनुष्य भी अपनी बुद्धि का प्रयोग अधिक से अधिक सुख प्राप्त करने के लिए कर रहा है, परन्तु थोडे क्षण भर सुख के लिए अन्य प्राणियों को नष्ट कर रहा है। फिर तो सुख की बजाय दुख का पहाड़ सामने आ जाता है। इन दुखों से बचाने के लिए हमारे तपस्वी ऋषि-मुनियों ने अनेक उपाय बताकर हमारा मार्गदर्शन किया है। मेरा अनुभव है कि यदि हम जीवन में प्रतिदिन ये स्वसंकल्प करें, तो हमारा जीवन सुख से व्यतीत होगा- (1) मैं असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करके उसका पालन करूंगा, (2) परिश्रम और पुरुषार्थ से धन उपार्जन करूंगा। छल कपट और झूठ का व्यवहार नहीं करूंगा, (3) ईर्ष्या, द्वेष की अग्नि से बचता रहूंगा, (4) क्रोध में आकर किसी को गन्दे, कटुवचन नहीं बोलूंगा, (5) आत्मिक उन्नति के लिए संध्या-स्वाध्याय करता रहूंगा, (6) स्वाध्याय का ध्यान रखते हुए आहार-विहार में कुपथ्य नहीं करूंगा, (7) अपनी प्रसन्नता के लिए यथासंभव परोपकार के काम करूंगा, (8) अपने गुरुजनों की सेवा-सम्मान करके अशीर्वाद लेता रहूंगा।

विस्तार के बोझ से बचने के लिए संक्षिप्त में कुछ बातें लिखी हैं। यह सफल और स्वस्थ जीवन का नुस्खा (योग) है। कोई पैसा-रुपया खर्च नहीं होता। इसका प्रयोग करके देख लो। बातें और भी हैं, जैसे- चिन्ता की बजाय चिन्तन करो, भागदौड़ करने के बाद भी आपका कोई काम नहीं बनता है, तो धैर्य रखो, हिम्मत मत हारो। किसी ने आपका अपमान कर दिया है, तो तनाव में आकर बदले की भावना से अपना संतुलन मत बिगाड़ो। जीवन में काफी रगड़ा खाने के बाद मुझे प्रकाश की किरणें मिली हैं, इसलिए ये सब बातें लिखी हैं।

दयानंद का त्रैतवाद कोरा आध्यात्म नहीं

डॉ. सत्यदेव आजाद

वैदिक धर्म के निर्भीकतम उद्धारक एवं आर्यसमाज के संस्थापक देव दयानंद को बहुधा समाज सुधारक के रुप में ही जाना जाता है। सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में जिन महान व शुद्ध दार्शनिक सिद्धान्तों की उन्होंने मीमांसा की है, उनकी ओर कम व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट होता है। भारत में सहस्रों वर्षों के पश्चात वैज्ञानिक प्रणाली का अनुसरण करते हुए दयानंद ने वेदों का भाष्य करने के लिए अनूठी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था, वह आज भी एक चमत्कार है। किन्तु उनका दार्शनिक सिद्धान्त त्रैतवाद तो आधुनिक भौतिकवाद के लिए एक चुनौती है। वेदों के सघन वन में स्वामी दयानंद ने एक नवीन सिद्धान्त की खोज की। उन्हें पता चला कि विश्व में तीन पदार्थ नित्य हैं, अनश्वर हैं। ईश्वर, जीव, तथा पंच महाभूत स्वरुप प्रकृति। सत्व, रज और तम में विषमता का आविर्भाव विकृति की उत्पत्ति का कारण है। इनमें प्रकृति तीनों कालों में अपने मूल रूप में विद्यमान रहने वाली सत रूप है। इसीलिए उसे सतचित आनन्द (सच्चिदानन्द) कहा गया है। महर्षि दयानंद के अनुसार ईश्वर तथा जीव व प्रकृति में अंश-अंशी का संबंध नहीं, व्यापक-व्याप्य का सम्बंध है। जब ईश्वर को हम सर्वव्यापक, निरवय अपरिणामी और एकरस मानते हैं तब भला उसमें परिवर्तन यानि परिणाम कैसे संभव है? परिणाम तभी संभव है, जब वह सावयव हो, आकाश उस के मध्य विद्यमान हो। ईश्वर तो आकाश से भी अधिक सूक्ष्म है, वह आनन्द में भी व्यापक है फिर ईश्वर को क्या पड़ी है कि यह अल्पज्ञ जीवन अथवा जड़ बने और पुनः उससे मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील रहे।

दयानंद ने वेदों के आधार पर ही यह खोज की, वर्तमान सृष्टि प्रथम और अंतिम सृष्टि नही है। सृष्टि और प्रलय का एक क्रम अथवा चक्र है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलेगा। इसके विपरीत भौतिकवाद का कहना है कि यह प्रथम सृष्टि से पूर्व आरम्भ में अनंत आकाश में पदार्थ बिखरा हुआ था, निस्तब्धता थी। अकस्मात् इस स्थिर पदार्थ में गति उत्पन्न हो गयी। जो शनैः-शनैः विभिन्न लौकों, ग्रहों, उपग्रहों तथा नक्षत्रों की रचना में स्वयं परिवर्तित हो गयी। अनन्ताकाश में अनादि काल से फैले हुए निर्जीव जड़ पदार्थों ने मात्र सृष्टि की ही रचना नहीं कर डाली, बल्कि मानव शरीर में भी जीव जैसी चेतन सत्ता को उत्पन्न कर दिया, जो आज भी शरीर के संगठित और विघटित होने पर उत्पन्न होती है। नष्ट नहीं होती। भला जो पदार्थ अनन्त आकाश में अनादि काल से निष्क्रिय अवस्था में पड़ा था, वह क्यों और कैसे सक्रिय हो उठा। फिर यदि विचित्र नियमबद्ध सुव्यवस्थित जगत जिसके अल्पांश का अभी तक बड़े से बड़े वैज्ञानिक और विचारक मात्र परीक्षण कर रहे हैं- अकस्मात ही उन्हीं भौतिक शक्तियों के सम्मिलन के फलस्वरुप बन गया, तो अवश्य ही वे तथाकथित शक्तियां उन मानवीय बुद्धि-जीवियों से कहीं अधिक बुद्धिमान होंगी। इस स्थूल शरीर के अतिरिक्त जीवात्मा के ऊपर एक सूक्ष्म शरीर भी होता है, जो मृत्यु के बाद अन्य जन्मान्तरों में उस समय तक रहता है, जब तक कि जीवन मोक्ष प्राप्त नहीं कर लेता। इस सूक्ष्म शरीर में ही मानव की समस्त अनुभूतियां उसमें प्रसुप्तावस्था में रहती हैं। मनुष्य के जन्म लेने पर पूर्व जन्म के संचित संस्कार अनुकूल वातावरण के मध्य विकसित हो जाते हैं, जो प्रतिकूल स्थिति में निष्क्रिय रहते हैं। त्रैतवाद में मोक्ष का स्वरुप नितान्त भिन्न है, जहां न तो जीव ब्रह्म बनता है और न उसे ब्रह्म का सानिध्य ही प्राप्त होता है। मोक्ष अवस्था की एक अवधि है, जिसके अनुसार संसार में उसका पुनरावर्तन होता है। दयानंद का तर्क है कि किसी भी नदी का एक तट हो ही नहीं सकता। ये तो निश्चित है कि भूतकाल में किसी भी समय जीवात्मा ईश्वबद्ध हुआ था। यदि वह आदिकाल से ही वृद्धावस्था में हैं। तब इस तथ्य की निश्चितता कहां कि वह भविष्य में भी मुक्त हो जाएगा। कुछ यह भी कहते हैं कि मयावश ईश्वर ही जीवत्व को छोड़कर ईश्वरत्व को प्राप्त करना है। वे व्यक्ति इस तर्क का क्या उत्तर देंगे कि सर्व शक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर को क्या पड़ी जो पहले तो अल्पज्ञ शक्तिहीन जीव बने और पुनः अपने असली रुप को पहचानने का प्रयास करे। अपरिणामी ब्रह्म में वस्तुतः कोई भी परिवर्तन संभव नहीं है। दयानन्द ने इसीलिए कहा कि जो कभी बध्द हुआ है वह मुक्त होगा। बध्द व मुक्त होने वाला ईश्वर नहीं जीव है। सृष्टि प्रलय, ये बध्द मुक्त तथा जन्म व पुनर्जन्म के अदभुत चक्र अनादि काल से चल रहे हैं और अनंत काल तक चलेंगे। एक बार व्यक्ति जब यह विश्वास कर लेता है कि मै ईश्वर से भिन्न जीवरुप हूं। संसार मिथ्या नहीं वास्तविक है। पूनर्जन्म का चक्र क्रम अनादि और अनंत है। अपने कर्मों के अनुसार हम ईश्वर द्वारा फल प्राप्त करते हैं। हम उभय योनि के हैं। अर्थात हम कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र हैं और जहां तक पूर्व जन्म के फल योग का संबंध है, हम परतंत्र भी हैं। जो कुछ कम सोचते हैं, करते हैं, कहते हैं, वह अवश्य हमारे सुक्ष्म शरीर में अंकित और मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ जाता है। हमारे ध्येह जनम-मरण के बंधन से मुक्त होकर ईश्वर के सानिध्य में आनंद की प्राप्ति है। उस समय हमें सत्यपथ पर चलने की विशेष बाधा नहीं होती। देव दयानंद का ईश्वर न तो किसी आकाश विशेष में रहने वाला और न क्षीर सागर में सोने वाला ईश्वर है। वह सर्वत्र व्याप्त है और एकरस है। अन्तःकरण की शुद्धि सत्पथ पर चले बिना हो ही नहीं सकती। सत्पथ पर चलने से समाज, देश तथा सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा। अन्तःकरण की शुद्धि में समस्त जीवों का कल्याण समाविष्ट है। इस प्रकार दयानंद का त्रैतवाद कोरा आध्यात्म ही नहीं, वरन् हमारे सम्पूर्ण भौतिक जीवन को भी प्रभावित करता है। हम तदनुसार उदान्त भावनाओं से ओतप्रोत होकर जीवन में आगे बढ़ते हैं।

२३१३ अर्जुनपुरा, डीग गेट मथुरा
(मोबा. : 9897475850)

प्राचीन परम्परा है नव संवत्सर को कार्य प्रारम्भ करने की

नव संवत्सर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

डॉ० अशोक आर्य

भारतीय इतिहास में नव संवत्सर को विशेष महत्व दिया गया है। चाहें अग्रेजी राज्य में नव संवत्सर की गरिमा को समाप्त करने का प्रयास किया गया, सभी कार्य आरम्भ करने के लिए ईस्वी सन का सहारा लिया जाने लगा, किंतु गुलामी की वह जंजीर भारतीय संवत्सर के महत्व व प्रयोग को समाप्त करने में सफल न हो सकी। काल गणना में भारतीय नव संवत्सर का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। अतः आओ काल गणना की इस विधि पर विचार करें।

भारतीय इतिहास विश्व का प्राचीनतम इतिहास है। इसी कारण यहां की काल गणना की परंपरा भी प्राचीनतम है। यहां पर कालगणना की परंपरा भी अत्यंत प्राचीन व वैज्ञानिक है। सवत् चाहें किसी भी नाम से तथा कभी भी आरम्भ किये गये हों, किंतु इन सबका आरम्भ एक ही दिन चैत्र प्रतिपदा से किया जाता रहा है। नये कार्यों का आरम्भ भी नव वर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परंपरा आज भी बनी हुई है। नये नामों से संवत् आरम्भ करने पर भी प्राचीनतम सृष्टि संवत् को भारत में आज भी स्मरण किया जाता है। तभी तो सृष्टि संवत् लिखने की परंपरा आज भी निरंतर चली आ रही है। आज भी हम सृष्टि संवत् १९६०८५३११४ लिखना नहीं भूलते। जिसका भाव यह है कि इस सृष्टि को बने आज १९६०८५३११३ वर्ष हो चुके हैं तथा १९६०८५३११४ वें वर्ष के आगमन की हम प्रतीक्षा में, स्वागत में तैयार हैं, जो कुछ ही दिनों में आ रहा है। यह संवत् २०७० होगा। वर्तमान में जो संवत् भारत में सुप्रसिद्ध है, वह विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। भाव यह है कि इसका आरम्भ महाराजा विक्रमादित्य के नाम से हुआ है।

उज्जैन के शासक विक्रमादित्य के नाम पर आधारित वर्तमान भारतीय कालगणना के नामी राजा विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने के अवसर पर इस संवत् को आरम्भ किया था। इस संवत् का आरम्भ ईसा से ५८ वर्ष पूर्व किया गया था। इसका प्रथम दिन प्रतिपदा के नाम से जाना जाता है। इस दिन देशी महीने में चैत्र की प्रथम तिथि होती है।

नक्षत्र गणना करने वाले तो इसके महीनों के नामकरण भी नक्षत्रों से ही मानते हैं। उनका मानना हे कि चित्रा नक्षत्र में आरम्भ होने के कारण ही वर्ष के प्रथम महीने का नाम चैत्र रखा गया। विशाखा नक्षत्र से वैशाख नामकरण हुआ। ज्येष्ठा से ज्येष्ठ महीना बना, उत्तर आषाढ़ ही आषाढ़ महीने का जन्मदाता हुआ, श्रवण ने श्रावण का नामकरण किया, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के कारण भादों महीना अस्तित्व में आया, अश्विनी का जन्मदाता अश्विन नक्षत्र ही है, कृतिका नक्षत्र से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष (अगहन), पौष से पूस तथा मघा नक्षत्र से माघ महीने का नाम रखा गया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का राजतिलक भी तो इसी दिन हुआ था। इतना ही नहीं, महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक भी इसी दिन हुआ था। हम सबकी माता मां आर्यसमाज का जन्मदिवस भी इसी दिन का है, क्योंकि महर्षि स्वामी दयानन्द ने इसी दिन बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। अतः विश्वभर की आर्यसमाजों में यह दिन बड़ी शान से मनाया जाता है। इसी प्रकार अन्य भी अनेक यादें इस दिन के साथ जुड़ी हैं। अतः हम भारतीयों का नव वर्ष तो यही नव संवत्सर है। हमें अंग्रेजी दासता वाला नववर्ष न मनाकर यही भारतीय नव संवत्सर मनाते हुए एक-दूसरे को बधाई देनी चाहिए। इस अवसर पर मेरी ओर से आप सब बधाई स्वीकार करें तथा आगामी वर्ष में फलें-फूलें।

आर्यसमाज की स्थापना :-

स्वामी दयानन्द सरस्वती, वेद, भारत व भारतीयता के सच्चे पुजारी थे। आप जो भी काम करते थे, खूब सोच-समझकर करते थे। जब से आप दण्डी गुरु विरजानन्द की कुटिया को छोड़, कार्यक्षेत्र में आए, तब से आपने गुरु आज्ञानुसार कार्य करने के संकल्प के साथ देश का भ्रमण किया, ताकि देश के रोग को देश की वास्तविक अवस्था को अपनी आंखों से देख व समझ सकें। वह जानते थे कि जब तक सत्य का ज्ञान न होगा, जब तक रोगी की नाड़ी का सही पता न होगा, जब तक यह भान नहीं होगा कि रोगी का निदान किस औषध से हो सकता है। सही औषध तो रोग पकड़ने पर ही हो सकती है। बस इसी बात को पकड़ने के लिए उन्होंने देश की दुर्गम नदियों को पार करते हुए बीहड़ वनों तक की खाक छानते हुए भ्रमण किया। इस भ्रमण काल में उन्होंने अनेक कठिनाईयों का सामना किया। कहीं हिंसक पशुओं ने घेरा, तो कहीं बर्फीली नदियों का त्रास सहा। विधर्मियों व विद्रोहियों के अत्याचारों का तो आजीवन शिकार होते ही रहे, किंतु इतने संकट सामने देखकर भी कभी घबराये नहीं, निरंतर आगे ही बढ़ते चले गये। देश की अवस्था जानने के लिए घूमते हुए स्वामी जी लोगों को उपदेश भी देते थे, सुमार्ग भी दिखाते थे तथा कुरीतियों व अंधविश्वासों का खण्डन भी करते थे। स्वामी जी की इस शैली का लाभ अनेक संस्थाएं व विधर्मी लोग उठाना चाहते थे। यही वह कारण था कि कहीं ब्रह्मसमाज के नेता स्वामी जी के पीछे घूमते थे, तो कभी मुसलमान व ईसाई। स्वामी जी ने किसी की भी चिंता किये बिना, जो गलत होता था, उसका डंके की चोट से विरोध किया, तथा जो कार्य उत्तम होता था, उसका पक्ष भी खुलकर रखते। ऐसा करते हुए स्वामी जी ने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि कहीं कोई उनकी हत्या ही न कर दे। ऐसे अनेक अवसर आये, किंतु स्वामी जी ने बड़े साहस से इस सबका मुकाबला डटकर किया तथा विरोधियों को सदा नीचा ही देखना पड़ा। मूर्तिपूजा के कठोर विरोधी स्वामी जी को ईसाई लोग अपने साथ रखना चाहते थे, तो मुसलमान अपने साथ, ताकि एक महान मनीषी के सहयोग से वह अपने पंथ की वृद्धि कर सकें। ब्रह्मसमाज के नेता स्वामी जी पर इसलिए घेराबन्दी कर रहे थे, ताकि उनका लाभ उनकी संस्था को मिल सके। इस सब अवस्था में स्वामी जी ने भविष्य में भी अपने विचारों को मजबूती देने के लिए एक संगठन खड़ा करने की आवश्यकता का अनुभव किया। मुम्बई में एक विचार सभा हुई, किंतु इसमें कुछ भी निर्णय इस कारण न हो सका, क्योंकि इस योजना से ब्रह्मसमाज जैसी संस्थाओं के सपने धराशायी होते दिखाई देने लगे। इस कारण ऐसी संस्थाओं के इस सभा में उपस्थित अधिकारीगण इस विचार का विरोध करने लगे, किंतु इसके ठीक एक वर्ष बाद पुनः मुम्बई के काकडवाडी में आर्यसमाज के नाम से एक संस्था की स्थापना की घोषणा कर दी गयी। ऋषि जानते थे कि जो भी नया कार्य आरम्भ किया जावे, भारतीय परम्परा के अनुसार उस दिन नव संवत् हो। बस इसे ध्यान में रखते हुए आर्यसमाज की स्थापना के लिए भी यही दिन चुना गया। इस संस्था के जो नियम व उपनियम बनाये गये, वे अपने आप में विलक्षण थे। इस विलक्षणता के कारण इस समाज की शाखाएं देश के प्रत्येक कोने में बनने लगीं व देश भर में इसकी शाखाओं का जाल सा बिछ गया। अब ऋषि का कार्य और भी बढ़ गया। विचार प्रधान संस्था होने से वैदिक मान्यताओं के आधार पर उच्च शिक्षा संसार भर में बांटी जाने लगी। जो संस्था अब सत्य विद्याओं का आदि स्रोत ईश्वर को मानती हो, ईश्वर को न्यायकारी, दयालु, अजन्मा व निराकार मानती हो तथा जो सब काम धर्मानुसार, प्रीतिपूर्वक तथा यथायोग्य व्यवहार से करने का उपदेश देती हो, ऐसी संस्था का आकर्षण तो बढ़ना ही था। अतः अल्पकाल में ही विश्व के प्रायः प्रत्येक देश में भी इसकी शाखाओं का विस्तार होने लगा तथा इसके अनुयायियों की संख्या भी तेजी से बढ़ने लगी।

अल्पकाल में ही ऋषि के विचारों ने विश्वभर में तहलका सा मचा दिया। उन्हें अनुगामी भी उच्च कोटि के विचारक मिले, जिनके सदुपदेशों ने विश्व समुदाय को अपनी ओर आकर्षित किया। परिणामस्वरूप सर्वत्र आर्यसमाज की चर्चाएं ही बहस का विषय बन गयीं। अल्पकाल में ही आर्यसमाज के सर्वहितकारी कार्यों से इस संस्था की तूती चहुं दिशाओं में बजने लगी। इस संस्था ने मुख्यतः अछूत, नारी, बहुविवाह, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसे रोगों का विरोध करते हुए सब लोगों को समानता का अधिकार दिया। नारी को भी समान यहां तक कि वेद पढ़ने का भी अधिकार दिया। अंधविश्वासों व कुरीतियों के विरोध से ये रोग भी भागने लगे। गोमाता की रक्षा के लिए आन्दोलन किये, देश को संगठित करने के लिए हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया, देश की स्वाधीनता का बिगुल बजा दिया, जिससे हजारों लोग स्वाधीनता के युद्ध में कूद गये। देश की जिन रियासतों में हिन्दुओं को परेशान किया जाता था, वहां विरोध के स्वर सुनायी देने लगे। हैदराबाद की मुस्लिम रियासत में हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए अनेक बलिदान देकर वहां के निजाम को झुकने के लिए बाध्य किया। पटियाला में सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए बलिदान दिये। ऐसे अनेक कार्य कर, देशवासियों को सम्मानपूर्ण स्थिति में पहुंचाया। आज देशभर में ही नहीं, विश्वभर में आर्य संस्थाओं के माध्यम से ऋषि के बताए उपदेशों का प्रचार व प्रसार हो रहा है तथा वेद व वैदिक शिक्षाओं का खूब प्रचार हो रहा है। राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद, मण्डी डबवाली के माध्यम से वैदिक ज्ञान परीक्षाएं लेकर ऋषि सिद्धांतों का परिचय जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। नव संवत्सर के अवसर पर, आर्यसमाज की स्थापना के दिन हम संकल्प लेते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार में कहीं शिथिलता नहीं आने देंगे तथा पूर्ववत् प्रचार व प्रसार के कार्य करते ही रहेंगे।

१०४, शिप्रा अपार्टमेंट,
कौशांबी, गाजियाबाद
मोबा. : 09354845426

बच्चें न करें मोबाइल का दुरुपयोग

डॉ. नवाब सिद्दीकी

आज के युग में मोबाइल का प्रचलन बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है। आज हर लड़के, हर लड़की के पास मोबाइल का होना जरुरी है। चाहें उन्हें उसकी आवश्यकता हो या न हो, मगर कालेज में व समाज में अपना एक मुकाम बनाने के लिए इसका रखना जरुरी है। परीक्षा में पास होने के बाद आज बच्चे की पहली फरमाइश मोबाइल फोन व लेटटॉप है। मोबाइल भी वह, जो सब सुविधाओं से लैस हो। माता-पिता भी बच्चों की फरमाइश को पूरा करते हैं। पहली वजह यह होती है कि बच्चा कम्प्यूटर से कुछ सीखे तथा अगर कोई परेशानी आये तो मोबाइल पर सूचना दे दे। इसलिए मां-बाप बच्चे को मोबाइल फोन देते हैं। मगर समाज मे हर बच्चा एकसा नही होता है। आज के समय में ज्यादातर बच्चे मोबाइल का दुरुपयोग कर रहे हैं। आज देश में मासूम बच्चों के साथ बलात्कार, लड़कियों का अपहरण, प्रेम मिलाप आदि घटनाओं की देन मोबाइल फोन ही है। आज माता-पिता मोबाइल तो दिलवा देते हैं, मगर उनको यह देखने की फुर्सत तक नहीं कि बच्चे उसका सही उपयोग कर रहे हैं कि नहीं। बेटी के मोबाइल में किस-किस के नम्बर हैं। इन सब बातों पर आखें बंद कर ली जाती हैं। इसी प्रकार आज के नौजवान अपने माता-पिता की इज्जत को लांघकर मोबाइल का दुरुपयोग कर रहे हैं। वे कम्प्यूटर द्वारा अपने मोबाइल में अश्लील फोटो लोड कर लेते हैं। मोबाइल का दुरुपयोग फोटो खींचना फिर ब्लैकमेल करना है। आज हम अपने बच्चों को मोबाइल दिलाते समय यह ध्यान दें कि वह उसका उपयोग किस रुप में कर रहे हैं।

मण्डी चौब, अमरोहा

आर्यावर्त केसरी, अमरोहा
१६ से ३० अप्रैल २०१३

श्रद्धांजलि देने का वैदिक ढंग इस प्रकार हो सकता है (क्रमशः)

इन्द्रदेव गुलाटी 'सिद्धांतभूषण'

विद्वान लेखक श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी अपने विद्वता तथा खोजपूर्ण लेखों के लिए जाने जाते हैं। यहां आपने श्रद्धांजली देने का वैदिक ढंग लिखकर और उदाहरणों से समझाकर सुन्दर कार्य किया है। धर्मार्य सभा को लेखक के सुझावों पर विचार करना चाहिए। साथ ही संध्या, हवन व संस्कार पर्व संबंधी पुस्तकों में श्रद्धांजली देने के वैदिक ढंग का प्रकाशन करना चाहिए ताकि यह ढंग लोकप्रिय हो सके। आर्य ट्रस्टों व संगठनों से अनुरोध है कि ऐसे लेखकों, विचारकों को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाना चाहिए ताकि ऐसे सकारात्मक लेखन को भी प्रोत्साहन मिल सके।

-सम्पादक

आपातकाल के बाद चौधरी चरण सिंह भारत सरकार के गृह मंत्री बने। वे आर्य समाजी थे। उनके यहां महर्षि दयानन्द का ही फोटो लगा होता था। उद्योगपति बिरला जी का स्वर्गवास हो गया। कुछ दिनों के बाद शोक सभा आयोजित की गई। इस सभा में चौधरी चरण सिंह भी पहुंचे।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के तत्कालीन मंत्री ने कुछ महीने पूर्व कई अखबारों में लिखा कि जब चौधरी चरण सिंह का नाम पुकारा गया तब वे कुर्सी से नहीं उठे क्योंकि फोटो पर फूल माला पहनाकर श्रद्धांजलि दी जा रही थी। यह सनातन धर्मी पद्धति है जो सर्वत्र प्रचलित है। मंत्री मामचन्द रिवाड़िया ने लिखा कि चौधरी चरण सिंह इसलिए नहीं उठे क्योंकि वे आर्य समाजी थे और फोटो पर फूल माला पहनाना वर्जित है।

चौधरी चरण सिंह के न उठने पर उपस्थित जनों ने कानाफूसी की कि, कैसा नेता है? कितना घमण्डी है? स्वर्गीय बिरला जी को श्रद्धांजलि भी नहीं दे रहे हैं। मामचंद रिवाड़िया ने लिखा कि उन्होंने लोगों से कहा कि वैदिक धर्मानुसार फूलमाला फोटो पर नहीं चढ़ानी होती है, इसलिए चरण सिंह जी नहीं उठे।

प्रतिक्रिया

(1) मेरे विचार से चौधरी चरणसिंह को फोटो के निकट खड़े होकर कहना चाहिए था कि वे वैदिक धर्मानुसार श्रद्धांजलि देंगे। तत्पश्चात् उन्हें बिरला जी के पुत्र या जिसने चिता में अग्नि प्रज्वलित की हो उसे फूलमाला पहनानी चाहिए थी और फूलों की पंखुड़ियों की पुष्प वर्षा निकट सम्बन्धियों, मित्रों पर करनी चाहिए थी। यह कार्य वैदिक धर्मानुसार होता। यह दूरदर्शन। आकाशवाणी पर दिखाया जाता। प्रसारित होता और अखबारों में छपता। इससे लोगों को श्रद्धांजलि देने की वैदिक रीति पता चलती। आर्य समाज का प्रचार होता और उसकी अलग पहचान बनती।

(2) आर्य समाज की मान्यता है कि जीवित व्यक्ति को महत्व दें।/सम्मान दें/ आशीर्वाद दें इसलिए मृतकों के श्राद्ध करने वर्जित हैं अत: स्व. बिरला जी के अधूरे कार्यों को उनके पुत्रों/ सम्बन्धियों ने ही पूरे करने थे इसलिए शोक सभा में उन्हें फूलमाला पहनाकर/ पुष्प वर्षा करके अशीर्वाद दिया जाना चाहिए था।

(3) मैंने रिवाड़िया जी को पत्र लिखकर पूछा था कि श्रद्धांजलि देने का वैदिक तरीका बताएं। उन्होंने उत्तर दिया था कि वे बाद में लिखेंगे। अत: रिवाड़िया जी से अनुरोध है कि वे उपरोक्त ढंग पर अपनी राय व्यक्त करें कि यह पद्धति उन्हें कैसी लगी?

(4) चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा अनेक स्थानों पर लगी हुई है। दिल्ली में समाधि है जिसे किसान घाट कहते हैं। उनकी जयन्ती पर-मृत्यु दिवस पर, प्रतिमाओं पर फोटों पर तथा समाधि स्थल पर अभी तक सनातन धर्म की पद्धति से ही फूल मालाएं पहनाई जाती हैं- पुष्प वर्षा की जाती है और हाथ जोड़े जाते हैं। समय-समय पर विभिन्न संगठनों के नेता भी नगर आगमन पर इसी रीति से श्रद्धांजलि देते हैं जिसका कभी भी विरोध स्थानीय आर्य समाज-राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-धर्मार्थ सभाओं ने नहीं किया। यह देखकर खेद होता है और विचित्र सा लगता है।

(5) मेरा सबसे अनुरोध है कि चरण सिंह जी को श्रद्धांजलि वैदिक धर्मानुसार देने की परम्परा डालनी चाहिए अत: प्रतिमा-फोटों-समाधि की सफाई-झाड़-पौंछ तो अवश्य की जाए किन्तु, फूलमाला और पुष्प वर्षा सरकार के मंत्रियों-संगठन के अधिकारियों-कार्यकर्ताओं-समर्थकों पर ही पहनाई जाए और पुष्प वर्षा की जाए और किसी वेद मंत्र का उच्चारण भी किया जाए। यह वैदिक धर्म की पद्धति है। इसे लोक प्रिय बनाया जाए।

❁❁❁

हवन-संध्या की पुस्तकों में श्रद्धांजलि देने का ढंग नहीं लिखा होता। वैदिक विद्वान तथा धर्मार्य सभाएं पत्रों का उत्तर नहीं देती हैं। प्राय: सनातन धर्म की पद्धति से ही सर्वत्र श्रद्धांजलि दी जाती है। मेरे ज्ञान-अनुभव तथा अध्ययन के अनुसार वैदिक रीति से श्रद्धांजलि निम्न प्रकार दी जानी चाहिए-

(1) मृत्यु हो जाने पर तीजा-चौथा-दसवां-तेरहवीं- उठाला-क्रिया रस्म-पगड़ी आदि पर शोक सभा घर, पार्क, कम्युनिटी, हाल, धर्मशाला, होटल आदि सार्वजनिक स्थान पर की जाती है। वहां मृतक की फोटो स्टेज या कुर्सी पर रखी जाती है। वैदिक धर्म के अनुसार फोटो पर फूलमाला, फूल, धूपबत्ती, अगरबत्ती व दीपक जलाना मना है, क्योंकि ऐसा पौराणिक लोग करते हैं, जो मूर्तिपूजक होते हैं। अत: पहले वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना, महामृत्युंजय मंत्र, गायत्री मंत्र, ईश्वर स्तुति, प्रार्थनोपासना के मंत्रों, शांति प्रकरण के मंत्रों का उच्चारण किया जाए। कुछ मंत्रों का भावार्थ भी बताया जाए। तत्पश्चात् मंत्रों का उच्चारण करते हुए सबसे प्रमुख व्यक्तियों का टीका करते हुए कलावा बांधा जाए, फिर मुख्य या बड़ी फूलमाला मृतक के पुत्र को या जिसने चिता में अग्नि प्रज्वलित की हो, उसे पहनाई जाए और फूलों की पंखुड़ियां निकट संबन्धियों-मित्रों आदि पर बरसायी जाएं। फोटो पर कुछ भी नहीं करना है। इस प्रकार जीवित व्यक्ति के सम्मान तथा महत्व देना है। फोटो के आगे फूलों की थाली न रखी जाए। मृतक के अधूरे कार्यों को उनके पुत्रों, निकट संबन्धियों को ही पूरा करना है। अत: उन्हें ही सम्मानित किया जाए। भजन, व्याख्यान, उपदेश, श्रद्धांजलि, शोक-संदेशों को पढ़ने के बाद अंत में शांतिपाठ करके, सभा समाप्त की जाए।

(2) नेताओं/महापुरुषों की समाधियों, प्रतिमाओं, मूर्तियों पर प्राय: जन्म दिवसों, मृत्युदिवसों अथवा अन्य अवसरों पर समय-समय पर फूलमालाएं एवं फूल पहनाए/बरसाये जाते हैं। हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर नमन भी किया जाता है। यह पौराणिक ढंग है। आर्यजन भी ऐसा करके, अज्ञानता के कारण, अवैदिक ढंग से ही श्रद्धांजलि देते हैं, जबकि किसी आर्यसमाज अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी आपत्ति प्रकट नहीं की। वैदिक धर्मानुसार जब कोई परिवार, दल, संगठन, संस्था आदि के पदाधिकारी, कार्यकर्ता सामूहिक रूप से जाएं, तब कुछ वेदमंत्रों का उच्चारण करने के बाद मुख्य फूलमाला सबसे प्रमुख व्यक्ति/ नेता/ अध्यक्ष को पहनायी जाए। और मालाएं हों तो अन्यों को उनकी योग्यता/पद के अनुसार पहनायी जाएं तथा फूलों की पंखुड़ियों को शेष लोगों पर बरसाया जाए। अन्त में शांतिपाठ किया जाए और मन में संकल्प लिया जाए या खुलकर कहा जाए कि (मृतक का नाम लेकर) कि उनके द्वारा अधूरे छोड़े गये कार्यों को हम पूरा करेंगे।

(3) संसद भवन तथा विधानमंडलों में भी इसी वैदिक रीति से श्रद्धांजलि दी जाए। फोटो को केवल देखना है। उस पर फूल या फूलमाला नहीं चढ़ाना है। धूपबत्ती/अगरबत्ती भी नहीं जलाना है। जीवित नेताओं, मंत्रियों, सदस्यों आदि को ही महत्व व सम्मान देना है, क्योंकि अधूरे कार्यों को तो उनको ही पूरा करना है।

मैंने आज तक किसी को भी, वैदिक धर्मानुसार श्रद्धांजलि देते हुए न तो देखा है, न सुना है, न ही किसी अखबार में पढ़ा है! इसलिए उक्त लेख में श्रद्धांजलि देने का वैदिक धर्म लिखा है। यदि यह ढंग शुरु हो गया तो यह ढंग पौराणिक ढंग से ज्यादा लोकप्रिय हो सकता है, और पसंद आ सकता है। अत: आर्यजनों से अनुरोध है कि वे इस ढंग को अपनाएं और इसे लोकप्रिय बनाएं, ताकि आर्यसमाज की अपनी अलग पहचान बनेगी और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का लोगों में प्रचार-प्रसार होगा।

शेष अगले अंक में...

महत्वपूर्ण वक्तव्य

1. जिस धर्म का राज्य नहीं, वह धर्म प्रभावहीन है। -वीर सावरकर
3. हिन्दुओं का सैनिकीकरण और राजनीति का हिन्दूकरण राष्ट्रीय आवश्यकता है। -वीर सावरकर
4. भारत स्वाभाविक रुप से हिन्दू राष्ट्र है -वीर सावरकर
5. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। -महर्षि दयानंद
6. धर्मनिरपेक्ष देश में किसी भी समुदाय को अल्पसंख्यक नहीं मानना चाहिए -इन्द्रदेव गुलाटी
7. खंडित भारत का उचित नाम देश-विदेश की सभी भाषाओं में हिन्दुस्तान है -इन्द्रदेव गुलाटी
8. भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम "ओ3म" है। -महर्षि दयानन्द
9. चारों वेदों का सार गायत्री मंत्र है। -आई0डी0गुलाटी
10. सारी दुनिया की दौलत मिले, तो भी इस्लाम या ईसाई मत स्वीकार नहीं करूँगा। -डॉ. भीमराव अम्बेडकर
11. जो हीन नहीं है वह हिन्दू है। -मनोहर लाल शास्त्री
12. वह सम्प्रदाय जो 10 प्रतिशत से अधिक हो, अल्पसंख्यक नही है। -संयुक्त राष्ट्रसंघ
13. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। -आर्य समाज का लक्ष्य
14. हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो। -पंडिता राकेश रानी
15. प्रजातन्त्र में संख्या बल सबसे बड़ा निर्णायक बल है। -भाई परमानन्द
16. जब हिन्दू समाज का एक सदस्य मंतांतरणा करता है तो समाज की संख्या कम होती है और समाज का एक शत्रु बढ़ जाता है। -स्वामी विवेकानन्द
17. कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है -महर्षि दयानन्द
18. बिना किसी धर्मान्तरण प्रक्रिया के गांधी जी मस्तिष्क से सन् 1920-22 से ही मुसलमान हो चुके थे- रामगोपाल

विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार, मुम्बई

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

हिन्दी तथा हिन्दुत्व के प्रचारक महात्मा वेदभिक्षु जी

शिवकुमार गोयल

महात्मा वेदभिक्षु जी एक अनूठे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके हृदय में वैदिक धर्म तथा हिन्दुत्व के प्रति अगाध निष्ठा ही नहीं थी अपितु, ऐसा तेज और ओज था जो वैदिक धर्म को चुनौती देने वाले तत्वों को भस्मीभूत कर डालने की क्षमता रखता था। जो वैदिक धर्म को चुनौती देने वाले तत्वों को भस्मीभूत कर डालने की क्षमता रखता था। वेदभिक्षु जी जब विदेशी ईसाई मिशनरियों के हिन्दुओं के धर्मान्तरण के घातक षडयंत्र का समाचार किसी पत्र-पत्रिका में पढ़ते थे तो उनका हृदय हाहाकार कर उठता था। जब देश के किसी भाग में कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने का समाचार उनकी आंखों के सामने आता तो उनकी आंखें लाल हो उठती थीं। वे प्रायः कहा करते थे कि सेकुलरिज्म की आड़ में आज भारत के हिन्दू समाज को अल्पसंख्यक बनाने का षडयंत्र रचा जा रहा है। यदि हिन्दू संगठनों ने संगठित होकर इसका प्रतिकार नहीं किया तो भारत का एक ओर विभाजन होकर रहेगा। महात्मा जी चाहते थे कि आर्यसमाज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा आदि सब हिन्दूवादी दल एकजुट होकर देश के धर्मान्तरण के षडयंत्र को असफल करने की रणनीति बनायें। एक बार वे पिलखुआ पधारे तो मेरे पिताश्री भक्त रामशरण दास से उन्होंने कहा भक्त जी, स्वामी करपात्री जी तथा शंकराचार्या से संपर्क करके इस समय सबसे पहले हिन्दू संगठन के राष्ट्रीय कार्य को आगे बढ़ाने की योजना बनाई जानी चाहिए। उस दिन मैंने वेदभिक्षु के हृदय में धधकती हिन्दू धर्म की रक्षा की ज्वाला को निकट से देखा था। आर्य समाज का एक वर्ग 'हम हिन्दू नहीं आर्य हैं, हिन्दू विदेशी शब्द है, हिन्दू किसे कहते हैं जैसे प्रश्न उछालता तो वेदभिक्षु जी उन्हें समझाते कि हिन्दू शब्द प्राचीन आर्य और हिन्दू एक दूसरे के पर्याय हैं। हिन्दू किसे कहते हैं इसका विश्लेषण करते हुए महात्मा वेदभिक्षु ने एक बार लिखा था- भारत के सभी वासी जो इस धरती की वन्दना करते हैं, मां को, भारत मां को पूज्य, वन्दनीय और पावन समझ वन्देमातृम गाते हैं।

गंगा-यमुना-सरस्वती की, वेद गौ-गंगा - गायत्री के प्रति जिनकी निष्ठा है, जो समवेत स्वर में द्वारिका से निकोबार तक ही सारी धरती पर फहराते राष्ट्रध्वज के प्रति समर्पित हैं, वे सभी हिन्दू हैं। राम-कृष्ण की गाथाएं सुन जिनका मस्तक गौरव से तन जाता है। प्रताप-शिवा का शौर्य वर्णन जिन्हें नवजीवन देता है। दर्शन अध्यात्म -आत्म चिंतन जिनके मानस में अमृत बरसाता है, जो भारत की मिट्टी के प्रत्येक कण पर हजार कोहिनूर न्योछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं। हम उन्हें भी हिन्दू कहते हैं, जिनका मानस भारत-पाक युद्ध में भारत की विजय के समाचार से उछलता है, जो खेल के प्रांगण में भारत की जय ध्वनि पर तालियां बजाते हैं, जिनके घर आंगन में प्यार के गीत और मिलन के राग स्वयं मचलते हैं। जो गंगा की लहरों पर गूंजते संगीत के आरोहों, अवरोहों पर झूमते हैं। ऐसे सभी राष्ट्रभक्तों को हम हिन्दू कहकर अपने को धन्य मानते हैं। किन्तु जो हिन्दू नहीं वह देशभक्त। मत परिवर्तन होते ही राष्ट्रभक्ति में परिवर्तन आ जाता है। हम भारत में किसी देशभक्त को देशद्रोही बन कर नहीं बढ़ने देंगे। विदेशी शक्तियां भारत को हड़पने की चेष्टा में में धन-बल से षडयंत्र कर रही हैं। किन्तु भारत के देशभक्त उनके कुत्सित चिन्तन को विफल करने के लिए कृत संकल्प होकर जुट गए हैं। मेरी धरती की पावन माटी को कलुषित करने के लिए हिन्दू को हिन्दू का शत्रु बनाने का प्रयत्न सफल होना क्या हम सब के लिए कलंक नही है? क्या भौतिक साधनों से ईमान खरीदा जाएगा? क्या भारत का मानव चांदी के टुकड़ों पर बिक जायेगा?

इन प्रश्नों के साथ हम फिर यही संकल्प दुहराते हैं कि नहीं रुकेंगे और एक भी हिन्दू को ईसाई या यवन नहीं बनने देंगे। हम हिन्दू हैं यह राष्ट्रीय स्वर है। ''राष्ट्र रक्षाम'' का मंत्र हिन्दू ही गुंजा सकता है। वहीं गुंजाएगा और देश को बचाएगा। उनके एक-एक शब्द में ओज और तेज प्रस्फुलित होता था। जब वे भाषण देते थे तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वे वाणी व लेखनी दोनों के धनी थे। महात्मा जी, स्वामी दयानंद, श्रद्धानंद, बलिदानी महाराज राजपाल, स्वतंत्र वीर सावरकर, भाई परमानन्द के प्रति अनन्य श्रद्धा भावना रखते थे। उनके लेखों और भाषणों को कई बार आपत्तिजनक करार देकर मुकदमें चलाये गये किन्तु वे कभी विचलित नहीं हुए। राष्ट्रीयता के मुख्य प्रहरी, तेजस्वी निर्भीक पत्रकार, चित्रक तथा वेदों के अनन्य प्रचारक की पावन स्मृति में मेरा नमन है।

वरिष्ठ पत्रकार
पिलखुवा (उ.प्र.)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के दिल्ली में आयोजित समारोह में उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद भगत सिंह कोश्यारी का अभिनन्दन करते परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य।

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

एल्ला (दादरी)/सतीश आर्य। देवमुनि वानप्रस्थी (पूर्वनाम सुखवीर आर्य) के निवास स्थान पर 29 से 31 मार्च तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा चित्तेश्वरानन्द, देहरादून, व यज्ञमान प्रदीप आर्य तथा उदयप्रकाश आर्य सपत्नीक रहे। फरीदाबाद गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी भीमदेव ने व्यायाम प्रदर्शन किया, और सुखवीर आर्य ने बच्चों को यज्ञमय जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी।

मनाया होली मिलन समारोह

कांठ (अशोक कुमार विश्नोई)। आर्यसमाज द्वारा प्रथम बार 27 मार्च को होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 8 बजे यज्ञ के साथ हुआ तदोपरान्त शाम को 4 से 7 बजे तक होली मिलन का कार्यक्रम चला।

इस अवसर पर डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा, अशोक विश्नोई, नेता जी, ओमप्रकाश शर्मा, मुकेश माहेश्वरी, विमल माहेश्वरी, सतपाल, सुशीलमणि गुप्ता, विक्रम सिंह, संजीव गुप्ता आदि सहित भारी संख्या में आर्यसमाज के सदस्यगण तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

दीपचन्द्र धर्मार्थ न्यास द्वारा वेद प्रचार

सतीश चन्द्र आर्य
बिजनौर

दीपचन्द्र धमार्थ न्यास के तत्वावधान में बिजनौर जिले में 2 से 16 फरवरी तक गांव-गांव घर-घर वेद प्रचार आपके द्वार तक करने वाली सीता आर्य एवं आर्य भजनोपदेशक भीष्म आर्य के द्वारा वैदिक प्रचार किया।

जनपद के गांव गाजीपुर, ढीकरी, बढ़ापुर, कुम्हेड़ा, सिसौना, बहुपुरा, गडीवान, जोना, मकनपुर, निठारी हैबतपुर, गोविन्दपुर, मौडिया, शाहबाजपुर में प्रातः काल यज्ञ एवं सायं काल प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम एक पखबाड़ा चला। जब रोगी एक दो हो तो वह चिकित्सक के पास जाता है। किन्तु यदि महामारी फैली हो तो फिर चिकित्सक को ही रोगी के पास लाना होता है, इस भावना से यह कार्यक्रम किया गया। वाममार्ग के इस काल में जब मानव के आहार, व्यवहार में विवेक नहीं। दूसरे का मांस खाने के गौरव का अनुभव है।

ऐसे में समाज को यज्ञ की ओर ले जाने का प्रचार करने वाले साधुवाद के पात्र हैं। जो ग्राम-ग्राम में मण्डली बनाकर प्रचार कार्य कर रहे है। ऐसे में अपने धन को शुभ कार्य में लगाने वाले दीपचन्द्र ट्रस्ट के ट्रस्टी भी साधुवाद के पात्र हैं। परमात्मा से दीपचंद्र जी के दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की हम कामना करते हैं ताकि उनके नेतृत्व में उनके द्वारा स्थापित दीपचंद्र धर्मार्थ न्यास इसी प्रकार वैदिक मिशन तथा ऋषिवर दयानन्द के मंतव्यों के प्रचार प्रसार में लगा रहे।

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

रजिस्ट्रेशन 1 मार्च से

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक ने अत्यल्प काल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन यथाक्रम सुशोभित हैं। गुरुकुल के हरे पार्क, पार्कों की प्रवेशवीथिकाएं, तथा उनके उपद्वारों पर छायी लताओं के पुष्पगुच्छ पथिकों के मस्तक को चूमते-से प्रतीत होते हैं।

गुरुकुल में आपको प्रचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा। संस्था ने शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण में विशेष ख्याति अर्जित की है। अतएव प्रतिवर्ष प्रवेशार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष आपकी संस्था को स्थानाभाव के कारण ५६८ प्रवेशार्थियों को लौटाना पड़ा ! प्रवेश तथा व्यवस्था संबन्धी जानकारी निम्न है-

विशेषताएं :-

1. प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।	5. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
2. 10+2 तक C.B.S.E. दिल्ली से मान्यता।	6. आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
3. प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।	7. कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएं।
4. संध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, और नियमित दिनचर्या	8. 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साइंस साइड।
	9. हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र : 08607776897, 01262-217550

भावी पीढ़ी में करें जीवन-मूल्यों व नैतिक विचारों का समावेश

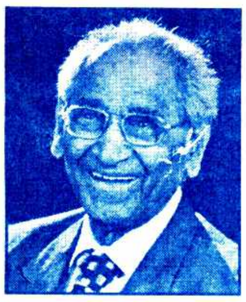

डॉ. जगदीश गाँधी

वर्तमानकाल के भ्रष्टाचार को देखते हुए भावी पीढ़ी की स्थिति का पूर्वानुमान करते ही मन कांप उठता है और इस पर चिन्तन हेतु विवश हो जाता है। तद्नुसार प्रस्तुत हैं कुछ विचार-

(१) चारित्रकता, नैतिकता, कानून व जीवन मूल्यों की शिक्षा के अभाव में बढ़ते जघन्य अपराध :-

दिल्ली गैंगरेप कांड के बाद से जनता पूरे देश में शान्ति मार्चों, कैण्डिल मार्चों, शोक सभाओं तथा प्रदर्शनों के माध्यम से सरकार से देश की साहसी बेटी दामिनी के हत्यारों को फांसी की सजा देने की मांग कर रही है, ताकि आगे से इस तरह के जघन्य अपराध को करने की हिम्मत कोई दुबारा न कर सके। देश की संसद को जल्द से जल्द पुराने कानून में बदलाव करके आज की सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार नये और अत्यन्त कठोर कानून बनाने चाहिए। इस मामले में इलैक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया भी अपनी प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं। चारित्रिकता, नैतिकता, कानून का सम्मान व जीवन मूल्यों की शिक्षा के अभाव में कुछ लोग आज राह भटक गये हैं; यही कारण है कि समाज में आये दिन ऐसी घटनाएं पढ़ने-सुनने को मिल रही हैं। समाज में चारों तरफ शैतानी सभ्यता बढ़ती ही जा रही है। आज की इन विषम सामाजिक परिस्थितियों में विशेषकर लड़कियों का भविष्य असुरक्षित होता जा रहा है। यह अत्यन्त ही दुःखदायी एवं शोचनीय विषय बन गया है। वास्तव में हम जो कुछ भी हैं, सदाचारी-दुराचारी, हिंसक-अहिंसक, सुखी-दुःखी, सफल-असफल, शांत-अशांत, आस्तिक-नास्तिक, अच्छे-बुरे आदि सब कुछ हमारे विचारों के कारण से हैं। हमारे जीवन में 'मन' एक खेत की तरह है तथा 'विचार' बीज की तरह हैं। जीवन व चित्त रूपी भूमि में हम परिवार, विद्यालय तथा समाज के वातावरण के द्वारा बालक के मन में जैसे विचारों का बीजारोपण करते है वैसे ही विचारों, चरित्र और आचरण का बालक बन जाता है।

(२) बच्चों को भौतिक के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा भी दें :-

हमारा मानना है कि मनुष्य एक भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक प्राणी है। जब से परमात्मा ने यह सृष्टि और मानव प्राणी बनाये, तब से परमात्मा ने उसे उसकी तीन वास्तविकताओं भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक के साथ एक संतुलित प्राणी के रूप में निर्मित किया है। इस प्रकार परमात्मा ने मनुष्य को भौतिक प्राणी बनाने के साथ ही साथ उसे सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्राणी भी बनाया है। अतः परिवारों और विद्यालयों के द्वारा बालकों को भौतिक, मानवीय एवं आध्यात्मिक अर्थात् तीनों प्रकार की शिक्षाओं का संतुलित ज्ञान कराना चाहिए, किन्तु यदि विद्यालय बालक को तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा देने के बजाय केवल भौतिक शिक्षा अर्थात् केवल अंग्रेजी, भूगोल, गणित और विज्ञान की शिक्षा देने तक ही अपने को सीमित कर ले और उसे मानवीय, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान न दें तब बालक का केवल एकांगी विकास ही हो पाएगा और संतुलित ज्ञान के अभाव में बालक निपट भौतिक और असंतुलित व्यक्ति के रूप में विकसित हो जाएगा और वह अपने परिवार व समाज के लिएं उपयोगी नागरिक नहीं बन पायेगा।

(३) परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिली शिक्षा ही मनुष्य का चरित्र निर्मित करते है :-

मनुष्य के तीन चरित्र होते है। पहला चरित्र प्रभु प्रदत्त, दूसरा माता-पिता के जीन्स (वंशानुकूल) से प्राप्त चरित्र तथा तीसरा परिवार, स्कूल तथा समाज से मिले वातावरण से विकसित या अर्जित चरित्र। इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण चरित्र तीसरा अर्थात् 'अर्जित चरित्र' होता है। इस अर्जित चरित्र का निर्माण बालक को परिवार, विद्यालय व समाज में मिले गुण व अवगुण पर निर्भर करता है। उसे जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिलती है, वैसा ही उसका चरित्र निर्मित हो जाता है। वास्तव में मानव और मानव जाति का भविष्य इन्हीं तीन क्लास रूमों (१) परिवार (२) विद्यालय तथा (३) समाज में ही गढ़ा जाता है। आज संसार में बढ़ते अमानवीय कृत्य जैसे हत्या, बलात्कार, चोरी, भ्रष्टाचार, अन्याय आदि शैतानी सभ्यता इन्हीं तीनों क्लासरूमों से मिले उद्देश्यविहीन शिक्षा के कारण है। अतः अभिभावक और शिक्षकों द्वारा घर और विद्यालयों में प्रेरणादायी वातावरण बनाने के लिये अपने व्यवहार के द्वारा प्रत्येक बालक को सामाजिक परिवर्तन का स्वप्रेरित माध्यम बनाया जाना चाहिये। इसके लिए विद्यालयों को समाज के प्रकाश का केन्द्र तथा टीचर्स तथा अभिभावकों को बच्चों का मार्गदर्शक, चरित्र निर्माता तथा ईश्वरीय शिक्षाओं का संदेशवाहक बनना चाहिए।

(४) बच्चों को संवेदनशील बनाते हुए उसमें ईश्वर भक्ति बढ़ायें :-

जब कोई बच्चा इस पृथ्वी पर जन्म लेता है, तो उस समय उसके मन-मस्तिष्क एवं हृदय पूरी तरह से पवित्र, शुद्ध एवं दयालु होते हैं किन्तु कालान्तर में वह बालक परिवार में रहते हुए जैसा देखता व सुनता है, स्कूल में जैसी उसे शिक्षा दी जाती है तथा समाज में रहते हुए लोगों का जैसा अच्छा या बुरा व्यवहार देखता है वैसा ही अच्छे या बुरे चरित्र का वह बन जाता है। इसलिए इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए घर, स्कूल तथा समाज तीनों को ही प्रयास करके प्रत्येक बच्चे में संवेदनशीलता, नैतिकता, चारित्रिकता तथा ईश्वर भक्ति के गुणों को बाल्यावस्था से बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही समाज में बढ़ते हुए अपराधों के लिए सिनेमा घरों में दिखाई जाने वाली गंदी फिल्मों, इन्टरनेट पर उपलब्ध अश्लील साइटों, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले नकारात्मक समाचारों, प्रकाशित अश्लील विज्ञापनों व फोटो पर रोक लगाने के लिए सरकार को तत्काल साइवर लॉ जैसे प्रभावशाली कानूनों से अपनी कानून व्यवस्था को लैश करना चाहिए।

(५) सारे देश में कानून का राज स्थापित करें :-

समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए हमें जहां एक कठोर से कठोर कानून को अपने देश में लागू करना चाहिए, वहीं दूसरी ओर इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि देश की 'संसद' या राज्य की 'विधान सभाओं' के माध्यम से बनाये गये कानूनों का पालन सही ढंग से हो भी रहा है या नहीं? देश की संसद में बनने वाले कानूनों को ठीक ढंग से लागू करवाने वाली संस्था में बैठे हुए जिम्मेदार लोग यदि सच्चे मन से इन कानूनों को लागू करने/करवाने लग जायेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब सारे देश में कानून का राज स्थापित हो जायेगा और इस प्रकार के जघन्य अपराध होने बंद हो जायेंगे। इसलिए हमारा मानना है कि इन्सान के अच्छे-बुरे विचार ही उसके कर्म को प्रेरित करते हैं। इसलिए इस प्रकार के जघन्य अपराध के लिए दोषी अपराधी को सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा देनी चाहिए ताकि कठोर से कठोर सजा के भय से कोई अन्य व्यक्ति किसी भी प्रकार के अपराध के बारे में सोच भी न सके।

(६) भावी पीढ़ी में जीवन-मूल्यों, चारित्रिक उत्कृष्टता व नैतिक विचारों का समावेश करें :-

समाज को चरित्रहीनता रूपी विनाश से बचाने के लिए स्कूल का सबसे अधिक उत्तरदायित्व है। स्कूल अपने इस उत्तरदायित्व की अब उपेक्षा नहीं कर सकता। हमने समाज रूपी खेत में जैसे बीज बोये हैं तथा जैसा खाद-पानी दिया है, आज वैसी ही फसल चारों ओर लहलहा रही है। देश के सभी शिक्षकों, अभिभावकों व माता-पिता को चाहिए कि वे भावी पीढ़ी में जीवन मूल्यों, चारित्रिक उत्कृष्टता व नैतिक विचारों का समावेश करें। विडम्बना यह है कि आज हम अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा कर किताबी ज्ञान तो भरपूर दे रहे हैं परन्तु मानवीय मूल्यों की उपेक्षा कर रहे हैं, अतः परिणाम सबके सामने है। ऐसे में बुरे विचारों की रोकथाम अच्छे विचारों के प्रचार-प्रसार से ही हो सकती है। यदि अब भी हम न सम्भले तो फिर बहुत देर हो जायेगी। हमें देश की साहसी बच्ची दामिनी के बलिदान को लेकर पूरे देश सहित विदेश में हो रहे जन जागरण को बेकार नहीं जाने देना है।

(७) भावी पीढ़ी में चारित्रिक उत्कृष्टता का अलख जगाने हेतु संकल्पित हों :-

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि -'सच्ची शिक्षा वह है जिसे पाकर मनुष्य अपने शरीर, मन और आत्मा के उत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास कर सकें, उसे प्रकाश में ला सकें।' प्रत्येक बालक की आत्मा जन्म से ही पवित्र और अकलुषित होती है। शुद्ध, दयालु तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित होने के कारण बालक जन्म के समय से ही परमात्मा के अनन्त साम्राज्य का मालिक होता है। किन्तु परिवार, समाज तथा स्कूल अज्ञानतावश बालक में जन्म से निहित इन तीन ईश्वरीय गुणों को निखारने-संवारने पर महत्व नहीं देते हैं। दिल्ली में घटित दुर्घटना समाज के प्रत्येक नागरिक को झकझोरती व आंदोलित करती है और साथ ही यह सोचने के लिए भी मजबूर करती है कि आखिर कब तक हम ऐसी घटनाओं को सहन करते रहेंगे। इसके लिए अभी से सचेत होना होगा और भावी पीढ़ी में बाल्यावस्था से ही चारित्रिक उत्कृष्टता को विकसित करने हेतु संकल्पित होना होगा, तभी समाज में फैली हुई इन बुराइयों पर रोक संभव है। - जय जगत् -

शिक्षाविद् एवं संस्थापक- प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

आर्यावर्त केसरी के मान्य सदस्यों की सेवा में

सदस्यता- सहयोग हेतु विनम्र निवेदन

(सम्मानित सदस्य संख्या........................)

मान्यवर महोदय, सादर-सप्रेम नमस्ते!

आशा है, सपरिवार स्वस्थ व सानन्द होंगे। आपकी सेवा में **आर्यावर्त केसरी** निरंतर भेजा जा रहा है- मिल रहा होगा।

हमें विनम्रतापूर्वक यह अनुरोध करना है कि आपकी **सदस्यता सहयोग राशि** माह........................... में समाप्त हो रही है। कृपया अपना **वार्षिक/द्विवार्षिक/आजीवन** अथवा **संरक्षक सदस्यता सहयोग** क्रमश: रू० 100/-, 200/-, 1100/- अथवा 3100/- स्व सुविधानुसार भेजने का कष्ट करें। सहयोग राशि **धनादेश** के द्वारा अथवा आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा के खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडिकेट बैंक के खाता सं0 88222200014649 में जमा करा सकते हैं। **कृपया सहयोग राशि जमा करने पर हमारे दूरभाष संख्या-05922-262033 अथवा चलभाष संख्या-08273236003 पर अवश्य सूचना देने का कष्ट करें।** आशा है पूर्व की भांति सदैव सहयोग व सद्भाव बनाए रखेंगे। हार्दिक धन्यवाद के साथ-

डॉ० अशोक कुमार आर्य- सम्पादक, आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)चल. : 09412139333

तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें..

आर्यसमाज हापुड़ में बलिदान दिवस तथा वार्षिकोत्सव पर हुए भव्य कार्यक्रम

आनन्द प्रकाश आर्य
हापुड़।

आर्यसमाज हापुड़ का 123वां वार्षिकोत्सव 18 से 21 अप्रैल तक बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। उत्सव में आर्यजगत के उच्च कोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक पधारे। 18 अप्रैल को प्रात: शोभायात्रा, एवं सायं कवि सम्मेलन हुआ, ठहरने एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था रही।

आर्यसमाज मन्दिर में अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के 82वें बलिदान दिवस पर राष्ट्ररक्षा यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्म पं0 राजेन्द्र शास्त्री व मुख्य यजमान रेखा गोयल, मदनलाल बूरा वाले थे।

शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए प्रधान आनन्द आर्य ने बताया कि आर्यसमाज की गोद में खेले, महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों की घुट्टी पिये अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव 23 मार्च 1971 को सायं 7 बजकर 33 मिनट पर हंसते, गाते, झूमते इंकलाब जिन्दाबाद,

आचार्या पुष्पा शास्त्री व स्वामी धर्मेश्वरानन्द को प्रतीक चिह्न भेंट करते डॉ. अनिल आर्य व हापुड़ के पदाधिकारी

साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे लगाते हुए माता की आजादी के लिए बलिदान हो गये।

फांसी के तख्ते पर जाते समय वहां खड़े अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर, जो इन्हें मस्त देख, सहमा-कांपता खड़ा था, उससे भगतसिंह ने कहा कि ''तुम भाग्यशाली हो, जो तुम्हें आज यह देखने का अवसर मिला है कि भारतीय क्रान्तिकारी किस तरह प्रसन्नता से सर्वोच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगा सकते हैं।''

इनके बलिदान से प्रेरणा पाकर अनेक युवाओं ने क्रान्ति के मार्ग को चुना, और बलिदान दिया। आज की युवा पीढ़ी को इस त्रिमूर्ति का जीवन हमेशा प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। हम सरकार से मांग करते हैं कि विद्यालयों में क्रान्तिकारी, देशभक्तों के जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में प्रमुखता के साथ रखकर इन पर शोधकार्य भी कराना चाहिए, जिससे दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी को देशभक्ति की राह प्राप्त होगी।

मंत्री डॉ0 विकास अग्रवाल ने कहा कि हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम अपने राष्ट्र से आतंकवाद, भ्रष्टाचार, कदाचार को समाप्त करने तथा राष्ट्र को सबल, समृद्ध, शान्तिमय बनाने के लिए सतत् प्रयास करेंगे। यही शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपने लिए नहीं, वरन् समाज के लिए, राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं, वहीं इतिहास में अमर होते हैं। सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव ने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। वे सभी आर्यसमाज से प्रभावित थे। पंजाब प्रान्त की आर्यसमाजों के प्रधान लाला लाजपतराय के बलिदान से प्रेरणा लेकर इन तीनों क्रान्तिकारियों ने साण्डर्स की हत्या कर बदला लिया था। लाहौर काण्ड में इन्हें बन्दी बनाकर मुकदमा चलाया गया, और फांसी की सजा सुना दी गयी। ये क्रान्तिकारी किसी राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिकों में श्रेष्ठ, और श्रेष्ठ क्रान्तिकारियों में श्रेष्ठ क्रान्तिकारी कहलाने योग्य हैं। हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। बनावटी नैतिकता, जिससे हमारा सारा राष्ट्रीय चरित्र दूषित और बनावटी हो गया है। क्रान्तिकारियों के पथ पर चलकर समरसता पैदा कर सकते हैं।

स्थापना दिवस पर भजन संध्या

राजेन्द्र कुमार आर्य
रामपुर (उ.प्र.)

आर्यसमाज पट्टी टोला, रामपुर में हिन्दू नववर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर 10 अप्रैल को रात्रि 8 से 10 बजे तक भजन संध्या एवं व्याख्यान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: 8 से 9 बजे तक हवन एवं प्रवचन व रात्रि 8 से 9 बजे तक भजन-प्रस्तुति महिला आर्यसमाज, रामपुर द्वारा व रात्रि 9 से 10 बजे तक आचार्य महावीर सिंह मुमुक्षु, राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता, मुरादाबाद ने व्याख्यान दिया। इस अवसर पर राजेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान; आदर्श मांगलिक, प्रधान; संजय रस्तोगी, मंत्री; निर्मला आर्य, मंत्री सहित भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे।

मनाया आर्यसमाज स्थापना पर्व

रमेश कुमार सूद
लुधियाना (पंजाब)

जिला आर्यसभा, लुधियाना द्वारा नवविक्रम संवत् 2070 के शुभारम्भ पर आर्यसमाज स्थापना दिवस 14 अप्रैल 2013 को आर्यसमाज मेन बाजार, पायल, जिला- लुधियाना में भव्य आयोजन किया गया। आशानन्द उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने अध्यक्ष तथा ज्योति प्रज्वलन रवि महाजन ने सपत्नीक किया।

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली, राहुल त्यागी
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mail:
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com